चन्दामामा
जुलाई १९९०

पैरीज़ टॉफियां और बिस्किट हर किसी को भाये
PARRY'S
Special
प्यारे बच्चों!
पैरीज़ फिर वापस आ गये हैं तुम्हारी छुट्टियों को पहले से भी ज़्यादा मज़ेदार बनाने के लिए. इन खास ४-पन्नों में तुम्हारे लिए कई बढ़िया उपहार बनाने के आसान तरीके हैं. इन्हें तुम अपने लिए बना सकते हो, या फिर अपने माता-पिता, भाई-बहनों के लिए. है न मज़ेदार बात? तो फिर पैरीज़ के इन पन्नों को काटकर सुरक्षित रख लो ताकि फुरसत के वक्त तुम इनकी मदद से मज़ेदार तोहफे बना सको!
CARAMILK
COFFY BITE
LOLLIPOP
TUY-ME
तुम्हारे दोस्तों को चकित करने के लिए
एक मधुमक्खी अपने वज़न से ३०० गुना अधिक भार अकेले उठा सकती है.
सब जानते हैं कि अंग्रेजी वर्णमाला में २६ अक्षर होते हैं. सबसे ज़्यादा अक्षर सिंहली भाषा में होते हैं—५४ और सबसे कम 'हवाई' भाषा में सिर्फ १२!
abc
HTA-7531-A

देखो! तुम अपने आप एक पैडल स्टीमर बना सकते हो! कैसे–हम बताते हैं. तुम्हें चाहिए थर्मोकोल शीट, ६ सें.मी. x ३.५ सें.मी. का मोटा कार्ड, दो एलास्टिक बैंड, एक पेंसिल, छोटा कार्ड बोर्ड बॉक्स, रंगीन कागज़, फेविकोल, धागे और रंग. अपने पापा से गर्म चाकू द्वारा थर्मोकोल का ८ सें.मी. x ५ सें.मी. का टुकड़ा कटवा लो जैसा चित्र में है. कार्डबोर्ड के डिब्बे को फेविकोल से थर्मोकोल पर चिपका दो. पेंसिल का नुकीला हिस्सा आगे की ओर खोंसकर ऊपर कागज़ की झंडी लगाओ. एलास्टिक बैंड पिछले सिरों पर लगाकर धागे से बांध दो. अब कार्ड बोर्ड का टुकड़ा धागे में फंसा दो. कार्डबोर्ड को धागे में लपेटो. स्टीमर पानी की धारा में छोड़ दो. देखा तुम्हारा स्टीमर पानी को चीरता चला जा रहा है!

क्या तुम जानते हो कि दक्षिण अमेरिका में टिनामोउ नाम की एक चिड़िया को 'ईस्टर एग बर्ड' कहा जाता है? वह नीले, हरे, गुलाबी, पीले और बैंगनी रंगों के अंडे देती है

नाश्ते में अंडा खाते हो न? तो अब उसका खोल मत फेंकना. अंडे के इन खोलों (छिलकों) से तुम मज़ेदार चेहरे बना सकते हो. हां बस एक बात का ख्याल रखना. अपनी मम्मी से कहना अंडे में सिर्फ़ छोटा सा छेद करें वह भी पतले भाग की तरफ. समझे!

आओ खेलें कुछ रंग भरे खेल!

खेल है एकदम सीधा-सादा. कार्ड, कैंची, धागा, मग या गिलास तथा रंग. मग या गिलास की सहायता से कार्ड पर एक गोल आकार बनाओ फिर उसे काट लो. इस वृत्त को सात बराबर भागों में बांटने वाली रेखाएं खींचो. फिर इन खानों में इन्द्रधनुष के सातों रंग यानी लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, जामुनी तथा बैंगनी रंग भर दो. कार्ड के केन्द्र के दायें-बायें दो छेद कर उसमें धागा डालो और धागे के दोनों सिरे बांध दो. धागे को दोनों हाथों की उंगलियों में फंसा कर इस गोल कार्ड को तेजी से नचाओ. जब कार्ड तेजी से घूमने लगेगा तब देखना–कार्ड का रंग सफेद दिखायी पड़ने लगेगा. और जब यह रुक जाएगा तब फिर रंगीन दिखायी देने लगेगा. अरे! क्या तुम नहीं जानते कि सफेद रंग इन्द्रधनुष के सात रंगों से मिलकर बनता है.

चलो ! कैटरपिलर ट्रक बनायें. मम्मी से ४ कॉटन रील, एक प्लास्टिक बोतल, कॉरूगेटेड कार्ड बोर्ड, इमल्शन पेन्ट, दो पेन्सिलें, कुछ प्लैस्टिसिन तथा स्कॉच टेप मांग लो. बोतल को चित्र में दिखाये गये तरीके से काटो या मम्मी से कहकर कटवा लो. इसे अपने मनपसन्द रंगों से रंग कर सुखा लो. पूरी तरह सूखने के बाद इसके निचले तथा ऊपरी हिस्से में दो-दो छेद करो जैसा चित्र में दिखाया गया है. इन छेदों में एक-एक पेंसिल डाल कर चिपका दो. दोनों पेंसिलों के छोरों पर एक-एक कॉटन रील प्लैस्टिसिन से चिपका लो. कॉरुगेटेड कार्ड बोर्ड की दो पट्टियां पहिये पर लपेटकर स्कॉच टेप से चिपका दो. इसमें मनचाहे ढंग से खिड़कियां बना लो जैसा चित्र में दिखाया गया है. इसे अपने छोटे भाई को दो. वह कितना खुश होगा?
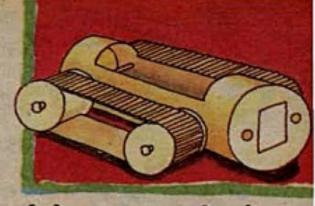
अब वर्ग-पहेली हो जाए

इन सबके उत्तर पैरीज़ स्वीट्स के मीठे-मीठे नाम हैं. है न बिल्कुल आसान? हां, उत्तर अंग्रेजी अक्षरों में लिखना !

संकेत:

1. कैरैमेल और मिल्क से भरपूर -वो मैं हूं !
2. आओ मुझे चखो-कौन हूं मैं?
3. मैं एक कॉफीटॉफी हूं-जानते हो मुझे?
4. मैं हूं लिक-स्टिक-मेरा नाम क्या है?
5. मेरे में है मिन्ट + टॉफी-मैं कौन हूं?
6. मैं मिल्क-स्वीट का राजा-पहचाना?
7. मैं स्वीट्स का राजा-समझो तो जाने?

उत्तर अन्तिम पृष्ठ पर.

कुछ और मज़ेदार बातें

- सबसे बड़ा पानी का पौधा विशाल लिली, अमेज़न नदी में पाया जाता है. वह अपने १० फुट के एक पत्ते पर बच्चे को संभाल सकता है.
- तुम जानते हो कि हिप्पो के बच्चे पानी के अन्दर पैदा होते हैं?
- डॉल्फिन मछली अपनी एक आंख खोल कर सोती है.

HTA-7531-B

आओ बनायें कागज़ी कटोरे!

अपनी मम्मी या दीदी के लिए एक कागज़ी कटोरा ही बना लो. इसे बनाना सचमुच आसान है. बस चाहिए कुछ पुराने अखबार, लेई बनाने के लिए आटा, पानी और कुछ रंग.

जिस आकार का कटोरा बनाना हो उसी आकार का बर्तन लो आटे व पानी की लेई बना लो. अखबार के छोटे-छोटे टुकड़े फाड़कर उसे लेई-में डुबोते हुए कटोरे के अन्दर वाले भाग में चिपकाते चले जाओ इसे कुछ देर सूखने दो, फिर उसमें कुछ और अखबारी कागज चिपकाओ ताकि कटोरे में अखबार की मोटी परत बन जाए. इसे पूरी तरह सुखाकर अखबारी कटोरे को बर्तन से बाहर निकाल लो, यह काम मुश्किल नहीं. कटोरे को पोस्टर पेन्ट की मदद से अपने मनचाहे रंगों व डिजाइनों से सजा लो. तुम्हारी मम्मी या दीदी इसमें छोटे-मोटे सामान रख सकती हैं, या तुम इसे उलट कर इनमें कुछ छेद कर इसे लैम्प शेड का भी रूप दे सकते हो.

प्यारे बच्चों! पैरीज़ चाहते हैं तुम्हारी छुट्टियां मज़ेदार ढंग से बीतें. तो बस, यह सब अपने हाथों बनाओ. हम तुम्हारे लिए जल्दी ही और मज़ेदार खेल भरे तरीके लायेंगे.

उत्तर:

1. Caramilk
2. Try Me
3. Coffy Bite
4. Lollipop
5. Mint Eclair
6. Lacto King
7. Parrys

अब पैरीज़ की और भी मज़ेदार योजना!

हां, अब पहले से भी ज़्यादा मज़ेदार. पैरीज़ की रंगीन पुस्तिका तुम जैसे नन्हें-मुन्नों के लिए. पैरीज़ स्वीट्स (सिर्फ़ पैरीज़ कैरामिल्क या पैरीज़ कॉफी बाइट) के २५ रैपर इकट्ठा करो और इस पते पर भेज दो : पैरीज़, द किंग ऑफ स्वीट्स, पो.बा. नं. २०४०, मद्रास-६०० ००१. हम तुम्हें भेजेंगे एकदम नयी रंगीन पुस्तिका जिससे तुम अपने हाथों से और भी कई मज़ेदार वस्तुएं बना सकोगे. पर जल्दी भेजना... तुरन्त!

यह योजना सिर्फ़
१५ सितम्बर १९९० तक

CARAMILK

THE KING OF SWEETS

HTA-7531-C

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

धूम्रपान की लत छोड़ दीजिये

धूम्रपान सेहत के लिये ख़तरनाक है, इस में कोई सन्देह नहीं है । पैसे की बरबादी तो होती है ही, मगर साथ-साथ आदमी का आयुर्मान भी घटता है । सिगरेट पीने से शुरू में आनन्द मिलता होगा, अच्छा भी लगता होगा; क्यों कि हर लत के साथ का प्रथम अनुभव यही होता है । मगर बाद में इनके भयानक दुष्परिणामों का भी सामना करना पड़ता है । धूम्रपान के परिणाम बहुत ही बुरे होते हैं । फेफड़े और गले की अनेक भयानक बीमारियाँ हो जाती हैं जिन से जीवन का सुख-संतोष नष्ट होता है ।

कुछ लोग समर्थन देते हैं कि आजकल के बढ़ते जीवन-वेग और तरह-तरह के तनावों का सामना करने के लिये धूम्रपान अनिवार्य हो जाता है । लेकिन यह बात सच नहीं है, यह तो महज़ भ्रम है । अमरीका एक ऐसा देश है,जहाँ का जीवन-वेग सब से ज़्यादा है, और ऐसे देश में भी आज धूम्रपान की लत घटती जा रही है । लेकिन सिगरेटों का सब से ज़्यादा निर्यात तो अमरीका से ही होता है । इसी को तो व्यापार कहते हैं!

अस्पतालों, विद्यालयों, वातानुकूलित रेल के डिब्बों में और हवाई जहाज़ों में केन्द्र सरकार ने ही निषेध लगा दिया है; अलबत्ता यह बड़ा ही प्रशंसनीय कदम है । इस प्रयत्न को सफल बनाने के लिये हर एक का योगदान आवश्यक है । ख़ासकर अध्यापकों को चाहिये कि वे तुरन्त इस लत को खुद छोड़ दें और विद्यार्थियों के पथप्रदर्शक बनें ।

वर्ष : ४२ जुलाई १९९० अंक : ११

एक प्रति : रु. ३/- वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

MAGGI CLUB
MAGGI CLUB FUN LOVERS
लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप सफ़ारी गेम
मैगी क्लब: आओ मनाएं जंगल में मंगल!
अपने उपहार मुफ्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के मुफ्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ्तों में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना. और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक
फ़ॉरिस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
MAGGI
2-minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 6679 HIN

नेपाल में प्रजातन्त्र

हिमालय पर्वत के दक्षिणी सानुओं से सटकर नेपाल देश फैला हुआ है। हमारे देश की उत्तरी सीमा पर रहे नेपाल के पश्चिम में सतलज नदी बहती है। उसकी पूरब की सरहद पर सिक्किम है। करीब डेढ़ करोड़ की आबादी वाले इस नेपाल देश की राजधानी है खाटमांडु।

नेपाल में हिन्दू और बौद्ध धर्म के लोग ही संख्या में अधिक हैं। एक और पड़ोसी देश है चीन; मगर उससे भी भारत के साथ के नेपाल के संबन्ध अधिक निकट के और मधुर हैं। यह रिश्ता आज या कल का नहीं, बल्कि बहुत पुराना है। सम्राट अशोक और समुद्रगुप्त के वक़्त भी, नेपाल उनके अपने राज्यों का ही एक भाग बनकर रहा था।

सन् १८४६ से सन् १९५१ तक नेपाल पर राजाओं का शासन नहीं था। अनुवंशिकता से आनेवाले सरदार 'राणा' के नाम से नेपाल का शासन करते थे।

सन् १९५१ में इन राणाओं के विरोध में एक प्रजा-आन्दोलन शुरू हुआ। राणाओं के हाथों से फिर शासन की बागड़ोर राजाओं के हाथों में आ गयी। फिर भी वहाँ के लोग प्रजातन्त्र के लिये लड़ने लगे। वे कभी-कभी अपने मन्त्री चुनाव द्वारा निर्धारित करते थे, लेकिन वे लम्बी अवधि तक सफल नहीं रह पाते थे और अन्तिम निर्णय राजा का ही होता था।

सन १९६९ में राजा महेन्द्र पार्टी रहित संसद 'राष्ट्रीय पंचायत' पद्धति को अमल में लाया। लेकिन जनमत को प्रस्तुत करने में यह पद्धति असफल रही। आम जनता की समस्याओं को दूर करने में यह असमर्थ साबित हुई। इसलिये नेपाल की जनता ने एकाधिकार बने एकराजतन्त्र के साथ-साथ प्रयोजनहीन 'पार्टीरहित राष्ट्रीय पंचायत' के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया, आम चुनाव और पार्टी पद्धति की माँग की।

सन् १९७२ में राजा महेन्द्र का देहान्त हो गया और उस का पुत्र राजा बीरेन्द्र 'राजा' बना। अधिकार सम्भालते ही राजा बीरेन्द्र ने समझदारी से समस्या को

सुलझाना चाहा और प्रजातन्त्र को अपनाने का निर्णय लिया। यह निर्णय बड़ा ही प्रशंसनीय रहा। इस वजह से वह शीघ्र ही ब्रिटन की रानी की तरह नाम-मात्र शासक बन जानेवाला था; मगर उसने इस बात की कोई चिन्ता नहीं की, और प्रजा की खुशी को ही उसने अपनी खुशी माना।

फिलहाल नेपाल की प्रजा खुश है। आख़िरकार उनकी इच्छा की पूर्ति हुई।

नेपाल की जनता अब अपने नूतन अधिकारों का उपयोग करके, अपने नेता को चुन सकती है। हाँ, उनके नेता अब उन्हें किस दिशा में ले जायेंगे, उसी पर अब नेपाल की जनता का भविष्य निर्भर करता है।

सम्मान किसे मिले ?

लखीमपुर गाँव में एक न्यायाधीश था । उसका नाम था धर्मवीर । वह बड़ा बुद्धिमान था और न्यायशास्त्र का उसने अच्छी तरह अध्ययन किया था । धर्मवीर शासन की ओर से नियुक्त राज-कर्मचारी था । सारा गाँव जानता था कि गाँव के झगड़ों का निपटारा करना उसके लिए बाएँ हाथ का खेल था । न्याय-निर्णय करते समय वह दूध का दूध और पानी का पानी कर देता था । महाराजा तक यह बात पहुँच गयी कि न्याय-निर्णय में धर्मवीर की योग्यता बेजोड़ है ।

राजा के मन में विचार आया कि धर्मवीर का सम्मान करना उचित होगा । सम्मान की व्यवस्था की गई और धर्मवीर को इसकी सूचना दी गई । धर्मवीर को सम्मानों के प्रति रुचि न थी, फिर भी राजा का निर्णय था, इस लिए चुपचाप राजधानी की ओर चल पड़ा ।

रास्ते में धर्मवीर की रामध्यान से मुलाक़ात हुई । वह भी लखीमपुर का रहनेवाला था और धर्मवीर उसे पहले देख चुका था । वैसे रामध्यान एक छोटा किसान था, और हरीश नाम के एक बड़े किसान ने उसे परेशान कर रखा था । हरीश ने झूठे काग़ज़ात दिखा कर रामध्यान से कहा-"तुम्हारे पिता ने मेरे पिता से काफ़ी कर्ज़ लिया था, और बिना उसे चुकाये वह चल बसा! जनम भर बस वह वादे ही करता रहा, लेकिन क़र्ज के पैसे लौटाये नहीं!" फिर उस कर्ज़ की वसूली करने के लिए हरीश ने रामध्यान के खेत पर कब्ज़ा कर लिया था । इस पर रामध्यान ने न्यायाधीश धर्मवीर के पास शिकायत की । हरीश के दिखाए दस्तावेज़ों को देख कर न्यायाधीश ने पहचान लिया कि वे सब झूठे हैं, और फिर फ़ैसला सुनाया कि रामध्यान का खेत उसे तुरन्त लौटा दिया जाए ।

कीर्ति महाजन
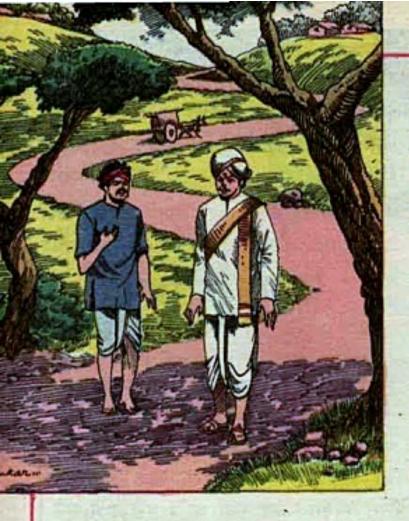
धर्मवीर ने पूछा—"रामध्यान, कैसे हो?"

"उस दयालु सत्यपालजी की कृपा से सब ख़ैरोबरकत है सरकार!" रामध्यान ने उत्तर दिया।

"क्या बात है? लगता है, सत्यपालजी ने तुम्हारी कोई विशेष सहायता की है। आख़िर उसने क्या उपकार किया, यह तो बताओ।" कहते हुए धर्मवीर ने रामध्यान की ओर देखा।

"हाँ सरकार, आज मैं और मेरा परिवार अगर भूखों नहीं मर रहे हैं, तो उसका सारा श्रेय ज़मीनदार सत्यपालजी को ही है। समूचा खेत खो कर जब मैं कंगाल हो गया था, तब सत्यपालजी ने अपने खेत से दो एकड़ का एक टुकड़ा मुझे दिया था। उसी में आज मैं खेती-बारी कर रहा हूँ, और आराम से अपने दिन काट रहा हूँ। अगर वे समय पर मेरी मदद न करते तो जाने मेरी क्या हालत होती! सारे परिवार को भूखा ही मरना पड़ता।" रामध्यान ने न्यायाधीश धर्मवीर से निवेदन किया।

यह सुनकर धर्मवीर चौंक पड़ा। उसकी समझ में नहीं आया कि हरीश ने रामध्यान का खेत उसे क्यों नहीं लौटाया था। उसने आश्चर्य से पूछा—"रामध्यान, यह तुम क्या कह रहे हो? मैंने तो फ़ैसला सुनाया था न कि तुम्हारा खेत तुम्हें लौटा दिया जाए। हरीश ने तुम्हें अपना खेत क्यों नहीं लौटाया अब तक? समझ में नहीं आता, मेरे फ़ैसले पर आवश्यक कार्रवाई क्यों न की गई? और तुम भी कैसे चुप बैठे रहे?"

इस पर फीकी हँसी के साथ रामध्यान ने कहा-"सरकार, आप ने फ़ैसला तो सुना दिया! पर क्या फ़ायदा? अमल में लानेवाला कौन है यहाँ? मैं कोशिश करते करते थक गया। इन रिश्वतख़ोरों का मैं कहाँ तक मुक़ाबला करूँ?" कहते हुए रामध्यान चला गया अपने रास्ते।

अब धर्मवीर सोचने लगा। बहुत सोचने के बाद रामध्यान की बातों में छिपी असलियत का तीखापन उसकी समझ में आ गया।

राजा द्वारा किये जानेवाले धर्मवीर के सम्मान को देखने के लिए लखीमपुर से कई लोग आये थे। उस में ज़मींदार सत्यपाल

भी एक था, जिसे न्यायाधीश धर्मवीर ने देख लिया था। राजा ने भरे दरबार में धर्मवीर के सम्मान के बारे में घोषणा की और धर्मवीर को अपने पास बुलाया।

धर्मवीर ने अपने स्थान से राजा को निवेदन किया—"प्रभु! मैं इस सम्मान के योग्य नहीं हूँ, इस लिए मैं यह सम्मान नहीं स्वीकार कर सकता, क्षमा कीजिए। आज आप ने मेरा सम्मान इस लिए करना चाहा कि मैं सच्चा इन्साफ़ देता हूँ। मगर इस से भी अधिक मौलिक जनसेवा करनेवाले हैं ज़मींदार सत्यपाल, जो अब इसी दरबार में मौजूद हैं। मैं चाहता हूँ, मेरी जगह उनका सम्मान किया जाए। सच्चे अर्थ में वही इसके योग्य हैं।"

यह सुन कर सभी दरबारी और सत्यपाल भी चकित हो गये। राजा ने आश्चर्य से धर्मवीर की ओर देखा।

धर्मवीर ने कहा—"प्रभु, मैं जो कुछ कह रहा हूँ, शत प्रतिशत सत्य है।" उसने राजा को वे सारी बातें सुना दीं, जो रामध्यान ने उसे रास्ते में कहीं थीं। और फिर धर्मवीर ने निवेदन किया—"महाराज, न्यायाधीश के नाते मैं न्याय देता हूँ अवश्य। परंतु कुछ भ्रष्टाचारी तथा घूसख़ोर राज-कर्मचारियों की वजह से मैं जो फैसले सुनाता हूँ, उन पर अमल नहीं किया जा रहा है। इस हालत में दीन-दुखियों की सेवा ज़मींदार सत्यपालजी कर रहे हैं। हमारे न्यायालयों और शासन-तंत्र से इनका कोई ताल्लुक़ नहीं है।

राजा ने कहा—धर्मवीरजी, आपका प्रस्ताव मुझे एकदम मंज़ूर है। सत्यपाल का कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है। हम उनका सम्मान करेंगे। साथ साथ सच्चे इन्साफ़ के लिए प्रसिद्ध आप भी सम्मान के योग्य हैं। अब मैं तुम दोनों का सम्मान करना चाहता हूँ।"

इसके बाद राजा ने धर्मवीर और सत्यपाल दोनों का बड़ी शान-शौकत से सम्मान किया। फिर राज्य के घूसख़ोर और भ्रष्टाचारी कर्मचारियों को चुन-चुन कर राजा ने सख़्त दण्ड दिया, ताकि वे फिर कभी सर न उठा सके ऊपर!

तीन ग़ुलाम
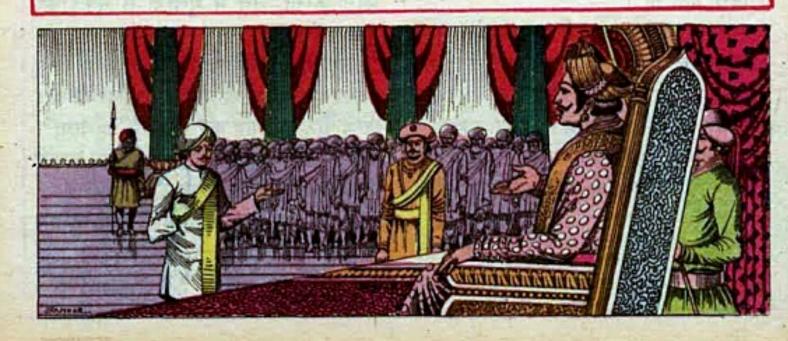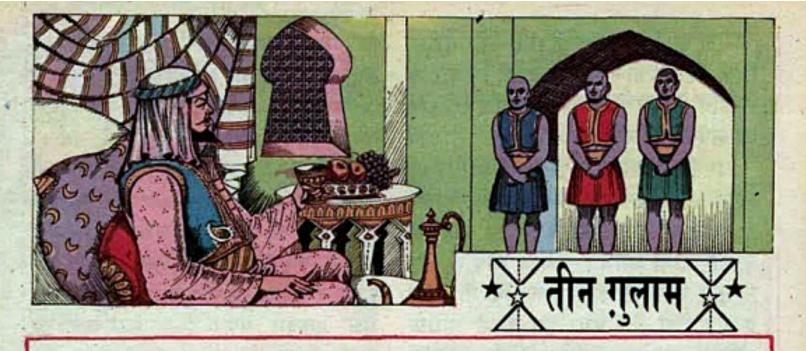
बात है पुरानी । उन दिनों बगदाद में एक बहुत बड़ा सौदागर रहता था । उसके पास तीन ग़ुलाम रहते थे । वे सौदागर के सभी काम किया करते थे । एक ग़ुलाम रात भर जागकर सौदागर के पैर दबाता था । दूसरा ग़ुलाम बीस फुट गहरे कुएँ से पानी खींच कर सौदागर के महल में पहुँचाने का काम करता था । तीसरा ग़ुलाम सौदागर के लिए बाज़ार से आवश्यक सामग्री खरीद कर उसे पीठ पर लादे सौदागर के महल तक पहुँचा देता था ।

तीनों ग़ुलाम बेगारी करते थे, मगर सौदागर ने कभी उन पर रहम नहीं किया । वे दिन-रात चाकरी करते, और उसके बदले में दो जून की रोटी भी उन्हें मयस्सर न होती ।

सौदागर शादीशुदा था, मगर कई वर्षों तक उसके भाग्य में कोई संतान न थी । मुद्दतों बाद उसके एक लड़का हुआ । सौदागर पिता बन कर ख़ुश हुआ । एक बार सौदागर के मन में अचानक एक विचार आया ।

सौदागर ने अपने पास काम करनेवाले तीनों ग़ुलामों को बुलाया और बड़े प्यार से कहा—"बड़ी मुद्दत से तुम तीनों मेरे यहाँ काम कर रहे हो । मेरे घर में लड़का आया, इस ख़ुशी के मौक़े पर मैं तुम तीनों का भला करना चाहता हूँ । आज तुम में से जो ज़्यादा काम करेगा, उसे मैं ग़ुलामी से मुक्त कर दूँगा ।"

उस दिन तीसरे ग़ुलाम ने महल के लिए आवश्यक अनेक चीज़ें बाज़ार से खरीदीं और उन्हें पीठ पर लाद कर महल में पहुँचाया । केवल दिन में ही नहीं, रात में भी वह अपनी पीठ पर सामान ढोता रहा ।

भिश्ती का काम करनेवाला दूसरा ग़ुलाम

मोहिनी सक्सेना

दिन-रात कुएँ से पानी खींचता रहा, और महल में पहुँचाता ही रहा। इस तरह ज़रूरत से ज़्यादा पानी ढोते हुए उस दिन उसने बड़ी मेहनत की। यों दिन-रात मेहनत करने की वजह से वह बेहोश हो गया।

तीसरा ग़ुलाम उस दिन मालिक के पैर दबाने नहीं गया। उस दिन उसने कोई छोटा-सा काम भी नहीं किया, कहीं पड़े रहकर मज़े से आराम करता रहा। सौदागर ने उसकी बहुत प्रतीक्षा की। जब देर तक वह नहीं आया तो सौदागर गुस्से से लाल-पीला हो गया। उसने नौकरों को आदेश दिया कि फ़ौरन उसे हाथ-पैर बाँध कर अपने सामने पेश किया जाए।

नौकरों ने पहले ग़ुलाम के हाथ-पैर बाँध दिए, फिर घसीटते हुए उसे सौदागर के सामने लाये। सौदागर ने उससे पूछा—"यह नालायक़ क्या करता रहा अब तक?"

"हुज़ूर, यह रसोई-घर के एक कोने में बैठा सुस्ता रहा है। आज दिन भर उसने कोई काम नहीं किया, सिर्फ़ बैठे-बैठे आराम कर रहा है!"

सौदागर ने दूसरे दो ग़ुलामों के बारे में पूछा। नौकरों ने बताया कि वे दोनों दिन-रात बस काम ही काम करते रहे और बेहोश हो गये हैं। सौदागर ने आदेश दिया कि उन्हें उसके पास पेश कर दिया जाए।

बेहोश पड़े दूसरे और तीसरे ग़ुलामों को नौकरों ने सौदागर के सामने पेश किया। सौदागर ने नौकरों से कहा, "इन्हें होश में लाओ।"
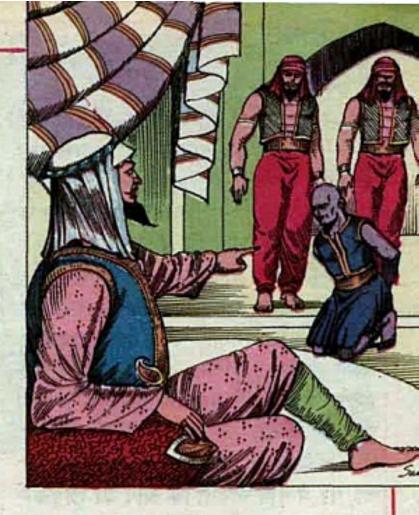
इस पर नौकरों ने उन दोनों ग़ुलामों के मुँह पर पानी छिड़का और उन्हें होश में लाने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद वे दोनों होश में आए। सौदागर उन दोनों पर बहुत ख़ुश था, क्यों कि उन्होंने दिन-रात मेहनत करके अपने मालिक के प्रति अपार भक्ति और श्रद्धा जताई थी।

सौदागर ने उन ग़ुलामों से कहा—"तुम दोनों ने मेरी बात पर अचंचल विश्वास रखा। मेरे प्रति तुम्हारी भक्ति देख मैं बहुत ख़ुश हूँ। इसी क्षण मैं तुम दोनों को आज़ाद कर रहा हूँ—मेरी ग़ुलामी से तुम मुक्त हो। अब आगे अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार तुम अपनी ज़िंदगी बिताओ।"

दोनों गुलामों ने सौदागर को मन से धन्यवाद दिए ।

फिर सौदागर ने पहले गुलाम की ओर बड़े गुस्से से देख कर पूछा—"अरे नालायक़! बेवकूफ़! उल्लू के पट्ठे! बेहतर मौका गंवा दिया तू ने । इतना उजड्ड और काहिल कब बना तू? सुस्ताने का आज ही अवसर मिला तुझे? क्या तुझे आज़ाद होने की इच्छा नहीं है?"

मालिक की इस दुत्कार पर गुलाम की आँखों में आँसू भर आए । दर्दभरी आवाज़ में उसने कहा—"मालिक, मैं जब तक ज़िंदा रहूँगा, आप ही की सेवा करता रहूँगा । आप को छोड़ मैं कहीं नहीं जाना चाहता । गुलामी से रिहा होने का आपने अच्छा अवसर दिया था, पर मैं नहीं चाहता कि आप को छोड़कर कहीं चला जाऊँ । इसी लिए मैं आज जान-बूझकर आप की सेवा करने नहीं आया । मैं हमेशा के लिए आप का गुलाम बन कर रहना चाहता हूँ ।"

अब सौदागर को असलियत का पता चला । अब उसके मन में पहले गुलाम के प्रति दया और प्रेम उमड़ आया । उसका गला रुँध आया । उसने कहा—"अरे पगले, तुम गुलामी से मुक्त हो जाओगे, तो इसका यह मतलब नहीं कि मुझ से बिछड़ जाओगे । जो भी हो, तुम ने कई साल बड़ी ईमानदारी से मेरी सेवा की है और अब भी तुम मुझे चाहते हो । इस लिए मैं तुम्हें भी आज रिहा कर रहा हूँ, आज से तुम आज़ाद हो । हाँ, तुम मुझे छोड़ नहीं जाना चाहते हो न, आज ही मैं तुम्हें अपने यहाँ नौकरी दे रहा हूँ । अब तो ख़ुश हो न तुम?"

इन बातों पर पहला गुलाम बहुत ख़ुश हुआ और मालिक के चरणों पर गिर पड़ा । इस पर सौदागर ने बड़े प्यार से उसे अपनी बाँहों में लिया और कहा—"अब भविष्य में तुम्हारे दिन हँसी-ख़ुशी में बीतेंगे । किसी अच्छी लड़की से मैं तुम्हारी शादी करवा दूँगा ।"

सचमुच पहले गुलाम के अच्छे दिन आये । सौदागर ने उसे अच्छी नौकरी दी, फिर उसका ब्याह रचाया । अब वह गुलाम संतोष के साथ अपने दिन गुज़ारने लगा ।

डाकू युवराज

१०

[पूर्वकथा: अमृतपुरी पर हमला करने के लिये वीरसिंह की सेनाएँ निकलीं, मगर सुधारा नदी में अचानक आयी बाढ़ में वे बह गयीं । सेना बढ़ाने व हथियार ख़रीदने के लिये पर्याप्त धन ख़ज़ाने में नहीं था, इसलिये वीरसिंह ने प्रजा से अतिरिक्त कर वसूलने का काम कपालकण्ठ को सौंपा । इस कर के कारण लोगों में प्रतिरोध की भावना जागी ।]

वसन्तऋतु के आगमन से जंगल में अद्भुत सौन्दर्य फैल गया । हरे-भरे पेड़-पौधों में रंग-बिरंगे फूल खिल उठे । आम बौरा गये । कोयलों की कूक सारे जंगल में गूँजने लगी । डालियों पर रंगीन पंछी चहचहाने लगे । उनकी चहक से ऐसा लगने लगा, मानो जंगल में मधुर गीतों की महफ़िल लगी हो ।

जब से शान्तिपुर के युवराज ने जंगल में कदम रखा था, तब से वसन्त की शोभा में चार चाँद लगे गये थे । युवराज अब छः साल का हो चुका था । जयानन्द मुनि ने उसे 'संदीप' नाम दिया था । जंगल के जानवरों और पंछियों को अपने इशारे पर चलाने की जो शक्ति जयानन्द मुनि में थी, उसकी मदद से वह अपने काम करवा लेता था । लेकिन बहुत से लोग यह बात जानते नहीं थे । मुनि की इच्छा थी कि जानवरों व पंछियों की

सहायता से काम कराने की कला वह संदीप को भी सिखा दें, ताकि उसे काम करने में आसानी हो। धीरे-धीरे अपनी यह शक्ति संदीप में संक्रमित करना, मुनि ने शुरू किया। उसी की मदद से युवराज सन्दीप वन्य मृगों से उसी तरह खेलने लगा, जैसे मनुष्यों से खेल रहा हो। संदीप के मित्रों में बड़े-बड़े दाँतों वाला एक हाथी था, जिसका नाम था करीन्द्र। जंगल के सभी हाथियों का वही मुखिया था। करीन्द्र रोज़ युवराज सन्दीप के पास चला आता था। सन्दीप को इच्छा हुई कि धीरे धीरे हाथी की पीठ पर सवार होकर सैर करने का मज़ा भी चखे। और यह उसने सीख भी लिया। सन्दीप जब भी उसकी पीठ पर सवार होना चाहता, हाथ ऊपर उठाकर संकेत करता था। करीन्द्र बड़ी ही सावधानी से उसे सूँड़ में उठाकर अपनी पीठपर रख देता था। एक बन्दर सन्दीप के पीछे बैठकर उसे नीचे गिरने न देने की सावधानी बरतता था। मल्ली नामक एक़ तोता एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते उड़ते हाथी को रास्ते की सूचना देता था। इस तरह जानवर और पंछियों की मदद से संदीप अपने तरह तरह के काम करवाने लग गया। सभी जानवर संदीप से बहुत हिल गए। उनकी मूक वाणी संदीप समझने लगा।

युवराज जब से जंगल में आया था, तब से मुनि की आज्ञा से भल्लूक नामक एक भालू उसकी रक्षा का दायित्व निभा रहा था। ज़मीन से मीठे-मीठे कन्द निकालकर वह युवराज को दिया करता था। कभी कभी जंगल के पास के खेतों से वह मीठे गन्ने भी ले आता था। दो बन्दर एक दूसरे से होड़ लगा सन्दीप के लिये आम, अमरूद और केले जैसे फल ले आते थे।

युवराज अक्सर बाघ के बच्चों के साथ आँख-मिचौनी खेला करता था। हरियाली पर आनन्द से किलकारियाँ लगाते हुए उन शावकों के साथ वह कुश्ती भी लड़ता था। मुनि संदीप और जानवरों के ये खेल बड़ी दिलचस्पी से देखता। संदीप का जानवरों व पंछियों से प्यार देख कर मुनि को बड़ा संतोष होता।

युवराज पाँच-छः साल का होते होते हर रोज़ सुबह जागते ही खुद झरने पर जाकर
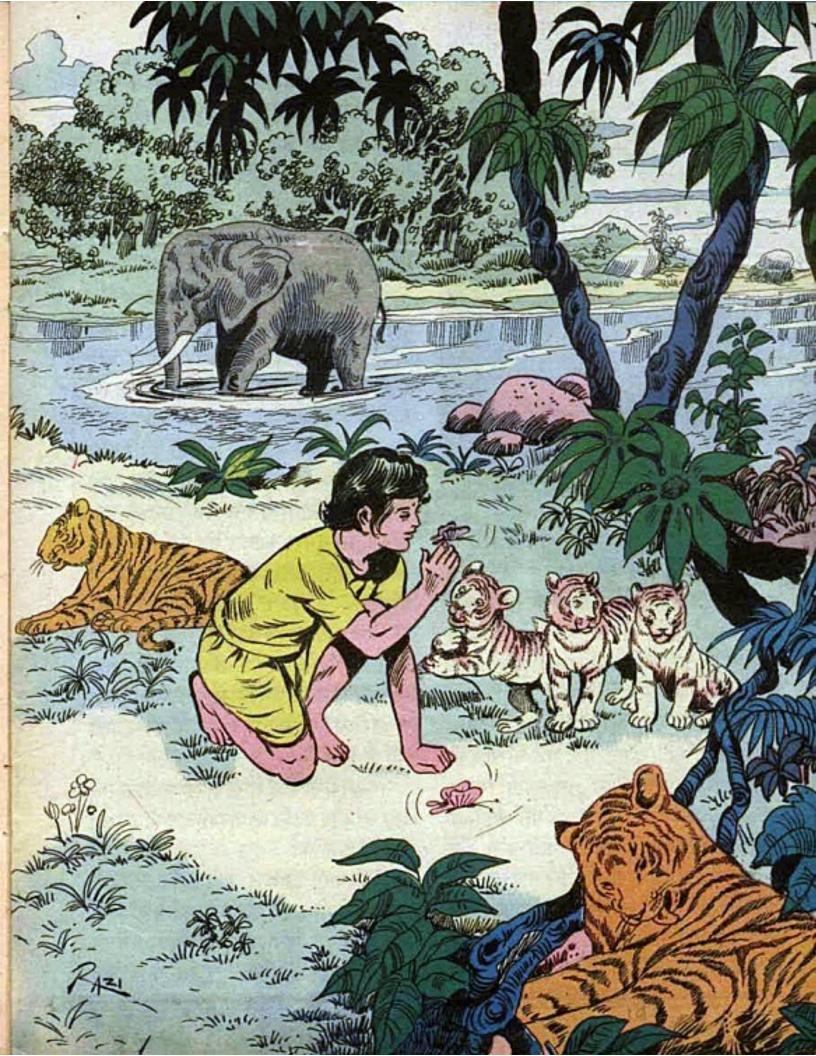
नहा लेता और बड़े भक्ति-भाव से गुरु के सामने आकर बैठ जाता था । गुरु उसे प्रार्थना, श्लोक और ध्यान की पध्दतियाँ सिखा देता था । संदीप को ध्यान में बड़ी अभिरुचि हो गई । रोज़ाना सुबह-शाम ध्यान किए बगैर उसे चैन न आता था । उसके बाद सन्दीप थोड़ी देर पढ़ना-लिखना भी सीखता था । इसके बाद गुरु के साथ ही वह जंगल में घूमने निकलता था । घूमते-घूमते मुनि जयानन्द उसे वहाँ के पेड़-पौधे दिखाकर उन के नाम बता देता और उस उस पेड़ के लक्षण और गुण समझाते हुए कहता, "पुत्र! इस सुन्दर प्रकृति का गौरव करना हमारा कर्तव्य है । मानव के जन्म के पूर्व से ही यह प्रकृति ऐसे ही बनी हुई है । भगवान के अद्भुत चमत्कार देखने के लिये और कहीं जाने की हमें ज़रूरत नहीं है । प्रकृति को बस एक बार ध्यान से देखें, तो काफी है । देखने की शक्ति रखनेवाले हर एक की आँखों को हर कदम अद्भुतता दिखाई देती है । हर पौधा हर क्षण कोई न कोई अद्भुत दिखाता ही रहता है । देखो, यह चम्पा का पेड़ है और यह चमेली की बेला है । दोनों एक ही धरती से उगे हैं; दोनों प्रकृति से प्राप्त जल, वायु और सूर्यप्रकाश का उपयोग करते रहते हैं, फिर भी चम्पा के फूलों के रंग और गन्ध चमेली के फूलों के रंग और खुशबू से अलग ही हैं न? ध्यान से देखो, तो इस में छिपा रहस्य ध्यान में आ जाता है । इसी ज़मीन पर पैदा हुआ एक पेड़ आम के फल देता है, तो दूसरा कटहल के! इस से बढ़कर अजीब बात और कौनसी हो सकती है भला?"

"अगर यह प्रकृति इतनी सुंदर है तो इसका निर्माता परमेश्वर कैसा सुंदरतर और सुंदरतम होगा । उसकी अनुभूति पा जाओ, तो और कोई बढ़िया चीज़ इस संसार में कहीं नहीं है ।"

गुरु की ऐसी बातें सन्दीप बड़े ध्यान से सुन लेता था और प्रकृति के परिशीलन में अद्भुत आनन्द पाता था । एक से एक सुंदर फल, झरनों के पानी की कल-कल ध्वनि, चाँद की स्वच्छ चांदनी इन सबके प्रति संदीप को बड़ी रुचि विकसित हुई । प्रकृति के साहचर्य में वह उच्च प्रति का आनन्द और संतोष महसूस

करने लगा।

"पुत्र, क्या तुम ने एक और बात पहचानी? ये पेड़ हमें फल देते हैं न? इस के ऐवज़ में ये हम से कुछ भी पाने की अपेक्षा नहीं करते! तुम अगर उनसे आम या अमरूद तोड़ लो, तो क्या वे तुम से कुछ माँगते हैं? कुछ पाने की प्रतीक्षा करते हैं? नहीं न? दूसरों को देने में और उनको खुश रखने में ही इनका आनन्द छिपा हुआ है। इस प्रकार ये वृक्ष जो आनन्द पाते हैं, वही आनन्द पाने की कोशिश हम मनुष्यों को भी करनी चाहिये। प्रकृति में विद्यमान यह अद्‌भुत व महोन्नत गुण हम मानवों को भी सीख लेना चाहिये।" इस तरह मुनि सन्दीप को प्रकृति से प्यार करना और उसके महान् गुण ग्रहण करना सिखाता था।

शाम को मुनि सन्दीप को लेकर पहाड़ पर जाता था। आकाश में चमकते तारों का परिचय उस वक्त वह सन्दीप को करा देता था। फिर उन तारों के साथ जुड़ी पुराण-कथाएँ भी वह सुनाया करता था। संदीप को आकाश के ग्रह और तारों के बारे में गहरी दिलचस्पी रहती। वह मुनि से तरह तरह के प्रश्न पूछता और मुनि सभी प्रश्नों के उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा पूरी करता। संदीप के कुछ प्रश्न बड़े रोचक हुआ करते और उसकी बुद्धिमत्ता देख कर कभी कभी मुनि को बड़ा आश्चर्य होता। संदीप की चौतरफा प्रगति पर मुनि को बड़ा संतोष होता था।

इस तरह युवराज सन्दीप राजधानी से दूर निसर्ग सान्निध्य में और प्रशान्त वातावरण में मुनि जयानन्द की निगरानी में बढ़ रहा था।

गुरु के द्वारा सुनायी गयीं कथाओं के पात्र राम, कृष्ण, ध्रुव और नचिकेता-इन सब के माता-पिता थे; लेकिन अपने कोई माँ-बाप क्यों नहीं? यह सन्देह एक बार सन्दीप के मन में उठा और झट वह मुनि से पूछ बैठा, "मेरे माँ-बाप कौन हैं गुरुदेव? कहाँ हैं वे?"

"पुत्र, क्या तुम जानते हो, कि एक बच्चे के लिये माँ-बाप की क्या ज़रूरत होती है? भगवान अपना प्यार माँ-बाप के द्वारा बच्चे तक पहुँचाता है, इसलिये माँ बाप ज़रूरी होते हैं। तुम बाक़ी सब के जैसे आम बच्चे तो नहीं हो! तुम महान् हो; इसलिये बिना किसी

वीरसिंह सिंहासन पर बैठा हुआ था। गुप्तचरों ने जो ख़बर उसे सुनाई थी, उस पर वह बहुत ही क्रोधित हुआ था। वह ज़ोर से चीखने लगा, "कपालकण्ठ, यह सब क्या हो रहा है? आज भी फिर बुरी ख़बर? आज़ हमारे कर्मचारियों से अनाज के बोरे लूट लिये गये? हमारे ही आदमियों को लूटनेवाले ये दुष्ट हैं कौन? उनमें इतनी ताक़त व ज़ुर्रत आयी कहाँ से?"

कपालकण्ठ की समझ में नहीं आया, कि इस पर क्या जवाब दे! वह चुप ही रहा और उसने अपना सिर झुका लिया।

"इन लुटेरों को किसी प्रकार गिरफ़्तार करना चाहिये। सब षड्यन्त्रकारियों को जड़ से उखाड़ना चाहिये। उन्हें जो भी सहायता दे रहे हों, उन सभी लोगों को कड़ी से कड़ी सज़ा देनी चाहिये।" दाँत पीसते हुए वीरसिंह बोल उठा।

इतने में अचानक एक तीर सभा भवन की खिड़की से होकर सर्र से अन्दर चला आया और दीवार से टकराकर आवाज़ करता हुआ ज़मीन पर गिर गया। तीर के दूसरे छोर पर कपड़े का टुकड़ा बँधा हुआ था।

वीरसिंह आश्चर्य से सिंहासन छोड़कर उठ खड़ा हो गया। उस के साथ बाक़ी दरबारी भी उठ गये।

तीर को उठाने के लिये कपालकंठ ने ज्यों ही आगे बढ़ने की कोशिश की, वीरसिंह ग़ुस्से से चिल्लाया, "मूर्ख! रुक जाओ!"

चीख सुनकर कपालकण्ठ ठिठक गया।

माध्यम के यानी बिना माँ-बाप के ही भगवान का प्यार तुम्हें सीधे प्राप्त होता हैं।" मुनि ने प्यार से उसके माथे को सहलाते हुए कहा।

इस पर सिर हिलाकर मन्दहास करते हुए सन्दीप ने कहा, "उस भगवान का प्यार मुझे आपके माध्यम से ही मिल रहा है गुरुदेव। आप ही मेरे पिता है और यह प्रकृति है मेरी माँ। मैं धन्य हूँ कि मुझे आपके समान पिता और प्रकृति-सी माँ मिली है। भगवान सचमुच बड़ा ही दयालु है गुरुदेव!"

मुनि ने हँस कर कहा, "तुम तो बड़े विवेक-संपन्न हो। अपनी चारों ओर की हर वस्तु में तुम भगवान के दर्शन कर पाओ, ऐसा मैं तुम्हें आशीर्वाद दे रहा हूँ।"

* * *

उसकी समझ में नहीं आया कि वीरसिंह इतना ख़फ़ा क्यों है ।

"जल्दी करो; पहले इस बात का पता करो कि तीर किसने छोड़ा था । हमारे सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया हो, तो सही; वरना फ़ौरन उसका पीछा करो, उसे पकड़कर ले आओ । जाओ, जल्दी करो!" वीरसिंह ने आज्ञा की ।

कपालकण्ठ तेज़ी से सभाभवन से बाहर निकल गया और उसके पीछे कुछ और अधिकारी भी चल दिये ।

"अब देख लेंगे कि उस तीर से कौन सी ख़बर भेजी गयी है । लाओ उसे यहाँ!" वीरसिंह ने कहा ।

वीरसिंह का प्रधान अंगरक्षक तीर की ओर चला गया, तीर को उठाकर उससे बँधे कपड़े को खोल दिया और उसमें से एक तालपत्र निकालकर वापस चला आया । तालपत्र उसने वीरसिंह के हाथ दे दिया । वीरसिंह पढ़ने लगा, "हम तुम्हारे आदमियों को लूट नहीं रहे हैं । वास्तव में तुम लोग अपने ही अबोध भोले-भाले किसानों को लूट रहे हो । असली लुटेरे तो तुम्हीं हो, न कि हम! अपना खून पसीना एक कर किसानों ने जो अनाज पैदा किया, उसे तुम लोग लूट रहे हो । उससे तुम मूर्ख लोग हथियार खरीदने की कोशिश में हो । जनता को तो रोटी और कपड़ा चाहिये; न कि हथियार! इसलिये तुम लोग जो अनाज लूट रहे हो, उसे वापस पाने की कोशिश आम लोग ही कर रहे हैं ।"

चिठ्ठी पढ़ने पर वीरसिंह की आँखें क्रोध से अंगारे जैसी लाल हो गयीं । कुछ देर के लिये वहाँ सन्नाटा छाया रहा ।
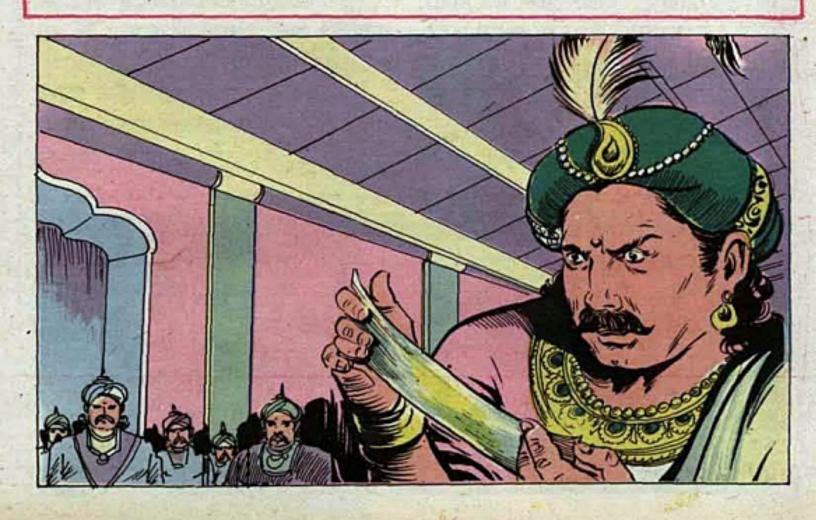
तीर छोड़नेवाले को उसके हाथ-पाँव बाँधकर कपालकण्ठ तुरन्त ले आएगा, इस प्रतीक्षा में वीरसिंह थोड़ी देर प्रधान-द्वार की ओर आँखें लगाये रहा; लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। वीरसिंह ने बेसब्री और गुस्से से पागल की तरह घूमते हुए कहा, "अभी अभी मैं कह रहा था, कि हमारे आदमियों को कोई लूट रहे हैं, उसी के बाद तो यह चिट्ठी लिखी गयी है। इसका मतलब यह हुआ, कि हमारे बीच ही कोई शत्रु का गुप्तचर है। उसीने शत्रु को यह ख़बर पहुँचा दी, या खुद उसीने चिट्ठी लिखी है। इतना सारा घटने के बाद हमें चुप रहना नामुमकिन है, चूँकि यह बात तो बहुत ही ख़तरे की है। इसी पल उस दुष्ट का अन्त कर दो, मार डालो उसे! नहीं, नहीं;---रुको---उसे मत मारो! उस दुष्ट से विद्रोहियों के रहस्य मालूम करने पड़ेंगे। सारे बाग़ियों को दबाना तभी संभव होगा। उसे मत मारो।....." पागल की तरह वह बकबक करता रहा।

इतने में कपालकण्ठ और उसके साथी दरबार में लौट आये। वीरसिंह ने जोश से पूछा, "कहाँ है वह दुष्ट? क्या तुम लोगों ने उसे जान से मारा?"

"नहीं प्रभु, वह दुष्ट हम से बच कर चला गया। जब उसने तीर छोड़ा था, तब एक सिपाही ने उसे देखा था और उसने उसे पकड़ने की कोशिश भी की। लेकिन उस बीच वह दुष्ट घोड़े पर सवार होकर भाग निकला।" कपालकण्ठ ने कहा।

"घोड़े पर भाग गया? तो क्या उसका पीछा करने के लिये हमारे पास घोड़ों की कमी है?" क्रोधभरे स्वर में वीरसिंह ने पूछा।

"वह सिपाही घुड़साल से घोड़ा बाहर निकलने से पहले ही शत्रु भाग निकला प्रभु!" कपालकण्ठ ने कहा।

"उस नालायक सिपाही को तुरन्त फाँसी चढ़ा दो! रुको.....रुको, उस घोड़े को मार दो!" वीरसिंह पागल जैसा चीखता रहा।

सभी दरबारी यह देखकर चौंक पड़े व आश्चर्य से एक दूसरे के मुँह ताकने लगे।

(क्रमशः)

राजा की परीक्षा

दृढनिश्चयी विक्रम फिर उस पेड़ के पास गये, पेड़ से लटकती लाश उतारी और अपने कंधेपर रखकर हमेशा की तरह मौन धारण कर वे स्मशान की ओर चल पड़े। तब उस पेड़ में बसा बैताल विक्रम से कहने लगा, "राजन्, आधी रात के समय इस वीरान और भयानक स्मशान में आप जो तकलीफ़ उठा रहे हैं उसे देखकर मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है। लगता है कि किसी ख़ास काम में सफलता हासिल करने के लिये आप यह सब कर रहे हैं। बुज़ुर्ग लोग हमेशा कहते हैं कि आम तौर पर राजा चंचल स्वभाव के होते हैं, और अलबत्ता यह बात भी सही है। इस लिये आप इस काम में कामयाबी पाने पर खुश होंगे, इस बात पर मुझे ज़रा भी विश्वास नहीं है। उदाहरण के तौर पर मैं आप को चन्द्रदेव नाम के राजा की कहानी सुनाता हूँ, जिससे आप को थकान भी कम महसूस होगी। सुनिए।—

बैताल कथा

दक्षिणापुरी नामक राज्य पर राजा चन्द्रदेव का शासन था। उसके कोई पुत्र-सन्तान नहीं थी; सिर्फ एक बेटी थी जिसका नाम था लक्ष्मीप्रिया। वह बहुत सुंदर थी और थी बड़ी चतुर। उसकी वाक्चातुरी की सभी प्रशंसा किया करते। अपनी मधुर-वाणी के लिए भी वह मशहूर थी। राजा के सुभाष और वीरबाहु नाम के दो युवक रिश्तेदार थे, जो राजमहल में ही रहते थे। दोनों बड़े ही सुन्दर और बुद्धिमान थे। राजा के प्रति बड़ी अदब से दोनों पेश आते थे। उन की उपस्थिति में राजमहल का सारा कार्यकलाप बड़े अनुशासन के साथ चलता। शांति के साथ सभी काम चलते रहते।

एक दिन रानी ने राजा से कहा, "सुभाष और वीरबाहु इन दोनों में से किसी एक को चुनकर हम उससे लक्ष्मीप्रिया का ब्याह रचाएँगे। बेटी विवाह के योग्य हो गई है। समय पर ही ब्याह कर देना चाहिए। ज़्यादा देर करना उचित नहीं होगा।"

"दोनों में से तुम्हें कौन अधिक पसन्द है?" राजा ने रानी से पूछा।

"वैसे तो दोनों भी भले और योग्य हैं। मगर मेरी वीरबाहु में ज़्यादा दिलचस्पी है, क्यों कि वह सुभाष से कहीं अधिक सुन्दर है। फिर भी मैं आपकी पसंदगी को ज़्यादा महत्त्व देती हूँ। आप जो उचित समझें वही करें। आप दोनों में से किसको अपना दामाद बनाना चाहेंगे?" रानीने अपना अभिप्राय दिया।

इस पर मुस्कराकर राजाने कहा, "सुनो, मुझे तो सुभाष में ही ज़्यादा रुचि है। फिर भी, किसी के रूपरंग पर आकर्षित होकर हमारी बेटी का वर ढूँढना बुद्धिमानी की बात नहीं होगी। स्वभाव से कोई खोटा हो, तो उसका बाहरी रूप रंग कितना भी सुन्दर क्यों न हों, कोई फ़ायदा नहीं। उलटे, जिसकी नीयत अच्छी होती है, वह कुरूप भी क्यों न हो, उसकी ख़ासी इज्ज़त होती है लोगोंमें। मैं मानता हूँ, मैंने जो कुछ कहा वह तुम्हें उचित ही लगेगा। फिर भी मेरा कोई ख़ास आग्रह नहीं है। तुम भी अपने मन की बात कह सकती हो।"

"फिर भी मुझे वीरबाहु ही पसन्द है। वह सुन्दर है, साथसाथ गुणवान भी है। मैं वैसे बरसों से उसे देखती आयी हूँ। उसकी

बहुतेरी विशेषताओं को मैं जान गयी हूँ। मुझे लगता है, ऐसा वर ढूँढने पर भी हमें नहीं मिलेगा। मेरे ख़याल में वही बेटी के लिये योग्य वर है।" रानी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"अच्छा, हम किसी परीक्षा द्वारा परख लेंगे। मुझे तो लगता है कि सुभाष ही ज़्यादा बुद्धिमान और योग्य है।" राजा ने कहा।

दूसरे दिन सुभाष और वीरबाहु को बुलाकर राजा ने कहा, "हमारे राज्य के सीमावर्ती प्रान्त धान्यकूट के बारे में तुम दोनों ने सुना होगा। उस प्रान्त के गाँवों से हमें कर की रक़म नहीं मिली है। मेरा शक है कि वहाँ के राजकर्मचारी ग़ाफ़िल और ग़ैरज़िम्मेदार हैं।" फिर उसने वीरबाहु से कहा, "देखो वीरबाहु, धान्यकूट के उत्तरी प्रान्त के गाँवों से कर-वसूली का दायित्व मैं तुम्हें सौंप रहा हूँ। सुभाष दक्षिणी भाग के गाँवों से कर वसूल करेगा। तुम दोनों धान्यकूट जाओ। वहाँ की स्थिति का अध्ययन करो, कर्मचारियों से बात करो। उनकी समस्याओं को समझ लो और उनका मार्गदर्शन करो। फिर कर की रक़म वसूल कर ले आओ।"

वीरबाहु और सुभाष वहाँ से जाने के लिये तैयार हो गये, तब उन्हें रोककर राजा ने समझाया, "धान्यकूट में हमारा जो महल है, उसमें तुम दोनों रहोगे। लौटते वक़्त अलग-अलग नहीं, बल्कि साथ-साथ आना है तुम दोनों को। हाँ तुम दोनों के साथ मैं कोई अंगरक्षक या सिपाही नहीं भेज रहा हूँ।
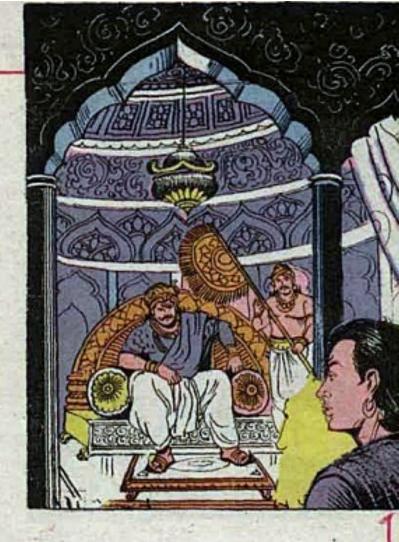
जानते हो क्यों? मैं तो यह जानना चाहूँगा कि तुम आत्मरक्षा के साथ-साथ राज-ख़ज़ाने की रक्षा करने की भी क्षमता रखते हो कि नहीं! अपने आप और बिना किसी की मदद के तुम्हें यह काम करना है। अपना काम खूब ज़िम्मेदारी से करना। हर क्षण सतर्क रहना ज़रूरी है। तुम दोनों में से एक को मैं सेनाध्यक्ष बनाना चाहता हूँ।"

इस बात पर सुभाष और वीरबाहु खुशी खुशी धान्यकूट के लिये रवाना हो गये। उनके जाने के बाद मन्त्री-पुत्र कृपाल को बुलवाकर उसे आदेश दिया कि वह छद्मवेष में उन दोनों के पीछे रहकर उनकी हरकतों पर निगरानी रखे।

धान्यकूट के राजकर्मचारी कर वसूल कर

खटखटाया । कोई एक नक़ाबपोश अन्दर गया और छुरी दिखाकर पूरा पैसा उसने ले लिया । वीरबाहु बहुत घबराया, उसने चोर का थोड़ा भी विरोध नहीं किया । पैसों की थैली उसे लेने दी ।

उसको संतोष था, कम-से-कम जान बची । कमरे से बाहर निकलकर चोर ने कमरे की कुंड़ी चढ़ा दी और अपनी राह चलता बना ।

कमरे के अन्दर से जब वीरबाहु चीखने चिल्लाने लगा, तब महल के पहरेदारों ने आकर दरवाज़ा खोला । सुभाष भी वहाँ चला आया । थोड़ी देर बाद वीरबाहु होश में आया और उसने हादसे के बारे में सब से कह दिया ।

सुनकर पहरेदार चौंक पड़े । उन्होंने कहा, "इस जगह चोरी होने की यह पहली ही बात है । राजकर्मचारी को लूटने वाला वह कोई भी हो, मगर होगा बड़ा होशियार डाकू । हम तो बाहर मुस्तैदी से पहरा दे रहे थे! हमारी नज़र से छूट कर कैसे कोई अंदर आ सका? बड़े ही आश्चर्य की बात है यह! हम उस होशियार डाकू को ढूँढ़ निकालेंगे । आप चिंता मत कीजिएगा ।"

सुभाष और वीरबाहु दूसरे ही दिन राजधानी के लिये निकले । वहाँ पहुँचते ही सुभाष ने अपने विभाग के कर की रक़म राजा के हाथ दे दी । मगर वीरबाहु आँखों में आँसू लिये उसके सामने चुपचाप खड़ा रहा!

राजा ने उसे तसल्ली दी, "बेकार फिक्र

रहे थे; तभी वीरबाहु और सुभाष वहाँ जा पहुँचे । कर्मचारियों ने दोनों का हार्दिक स्वागत किया । उन्हों ने आतिथ्य में कोई कसर नहीं रखी । किसानों और व्यापारियों से जो रक़म अधिकारियों ने वसूल की थी, वह सारी उन्होंने सुभाष और वीरबाहु के सुपूर्द कर दी । जो थोड़ी रक़म अब भी वसूल होनी थी, उसके लिए भी संदेश भेजे गये । वह रक़म शीघ्र ही जमा हो गई । इस तरह वसूली का पूरा पूरा पैसा बड़ी सहजता से इन दोनों के हाथ आ गया । सिर्फ़ दो सप्ताहों में उनका वहाँ का काम पूरा हो गया था ।

दोनों ने दूसरे ही दिन राजधानी वापस जाने का निर्णय कर लिया । मगर उसी रात किसीने वीरबाहु के कमरे का दरवाज़ा

मत करो वीरबाहु, तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं भी वही करता, जो तुम ने किया । डाकू राजमहल में भी चले आयेंगे यह किसने सोचा था? पर मुझे आश्चर्य लगता है कि पहरेदारों के होते हुए डाकू यूँ कैसे अंदर पहुँच पाया । हम उस डाकू को ढूँढ़ने की पूरी कोशिश करेंगे । अब तुम चिंता मत करो । तुम सही-सलामत रहे हो, इसी बात पर मुझे बड़ा संतोष है ।"

सुभाष खुश था, क्यों कि उसने अपना काम बड़ी क़ाबिलियत से निभाया था । राजा भी अपने काम पर खुश होंगे, ऐसा उसे विश्वास था ।

उसी दिन थोड़ी देर बाद कृपाल राजा के पास चला आया और धन की थैली उसके सामने रखते हुए उसने कहा, "महाराज, यह है वीरबाहु के हाथ से खोया हुआ धन!"

राजा ने आश्चर्य से पूछा, "यह सब क्या है कृपाल? वीरबाहु को तुमने क्यों लूटा?"

यह काम मैं ने नहीं किया महाराज, आप ने ऐसी कोई आज्ञा नहीं दी थी मुझे । मगर अँधेरे में जब चोर भागने लगा तब मैं ने उसके हाथ से थैली खींच ली ।" कृपाल ने कहा ।

"बात ऐसी है, तो चोर को ही तुम ने क्यों नहीं पकड़ा? थैली लेकर, तुम ने चोर को क्यों जाने दिया? यह बड़ा ही क़ाबिल डाकू दिखाई देता है, जो पहरेदारों की नज़र से बचकर कमरे में आया । तुम अगर उस डाकू को पकड़ पाते तो बहुत अच्छा होता!" राजा ने कहा ।

"जान बूझकर ही मैं ने ऐसा नहीं किया । मैं चाहता तो उसे पकड़ सकता था, या जान से भी मार सकता था । मगर मैं ने उस नक़ाबपोश को पहचान लिया था, इसलिये ही मैं ने सिर्फ उसके हाथ से थैली छीन ली । मैं कुछ ऐसी नाज़ुक मुसीबत में था कि चोर को पकड़ना मुझे ठीक नहीं लगा । मैं चाहता तो उसे बड़ी आसानी से पकड़ लेता । तब वह पड़ाव की ओर ही दौड़ा था ।" कृपाल ने जानकारी दी ।

राजा ने आश्चर्य से कहा, "क्या कहा? पड़ाव के राजमहल में ही था वह डाकू?"

"हाँ महाराज, उस का कमरा वीरबाहु के कमरे के बाजू में ही था ।" कृपाल ने कहा ।

पल भर चुप रह कर राजा ने फिर कहा,

"तुम अगर चोर को पकड़ते तो अच्छा होता कृपाल । मुझे तो अब भी आश्चर्य होता है, तुमने उसी क्षण उसे क्यों नहीं पकड़ा? ऐसी कौन नाज़ुक मुसीबत आन पड़ी थी तुम पर? उसने जो ज़ुल्म किया, वह मामूली नहीं है ।"

"एक बात और है महाराज! वह यहाँ ज़रूर आएगा, तब आप चाहें, तो उसे क़ैद कर सकते हैं-यही सोचा मैं ने । मैं छद्मवेष में था इसलिए मुझे उसने पहचाना नहीं, मुझे भी चोर समझा होगा ।" कृपाल ने कहा ।

उस रात राजा ने रानी से कहा, "इस राज्य का वारिस कौन होगा, इस के बारे में मैं ने निर्णय कर लिया है । अब तुम्हारी स्वीकृति भी मिल जाये, तो काम पूरा हो जायेगा ।"

"इस परीक्षा में वीरबाहु हार गया इसलिये आप ने सुभाष को ही हमारा दामाद चुना होगा; यही है न?" रानी ने पूछा ।

"बिलकुल नहीं, मैं ने तो कृपाल को चुना है । वह अपना दायित्व भली भाँति जानता है और वह बड़ा बुद्धिमान भी है । उसे कोई काम सौंपा जाए, तो वह उसे बड़ी समर्थता से करता है, जहाँ बोलने की ज़रूरत हो, वहीं बोलता है, बेकार एक शब्द भी मुँह से नहीं निकालता । वह थोड़ा भी लोभी नहीं है; पूरा वफ़ादार है वह । ऐसा गुणसंपन्न एक भी युवक नहीं देखा मैं ने ।" राजा ने कहा ।

रानी थोड़ी देर चुप रही । फिर मुस्कुराते हुए वह बोली, "मैं ने कभी नहीं सोचा कि ऐसा भी कुछ हो सकता है । मैं आपके निर्णय से पूर्णतः सहमत हूँ । मुझे लगता है कि शायद युवरानी भी उसे पसन्द करती है ।"

इसके बाद राजकुमारी लक्ष्मीप्रिया और कृपाल की शादी बड़े धूमधाम से हुई ।

यहाँ तक कथा सुनाकर बैताल ने विक्रम से कहा, "राजन्, कृपाल ने जो काम किया, वह तो कोई आम राजकर्मचारी भी कर सकता था न? फिर उसी के बर्ताव में ऐसी क्या विशेषता है कि उसे राजा ने अपना वारिस चुना? हाँ, यह सही है कि वह अपना दायित्व जानता है, और वह धैर्यवान भी है । मगर वह वफ़ादार है और लोभी नहीं है-यूँ हम कैसे कह सकते हैं? कृपाल के बारे में राजा ने जो बरताव किया, उस में उसकी चंचलता ही दिखाई देती है न? इसके सिवा कोई और कारण भी है? इन सवालों के जवाब जानकर भी न दोगे, तो

तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे ।''

इसपर विक्रम ने तुरन्त जवाब दिया, ''वीरबाहु से धन की थैली सुभाष ने इस कारण चुरायी कि वह खुद को उससे ज़्यादा समर्थ साबित कर, वीरबाहु को नाक़ाबिल सिद्ध करना चाहता था । मगर इससे यही पता चला कि दोनों असमर्थ हैं । क्यों कि कृपाल ने सारी बातें अपनी आँखों से देखी हैं । वीरबाहु एक डाकू से भी अपने को बचा न पानेवाला नाक़ाबिल है, तो सुभाष चोरी जैसी नीचता पर उतरनेवाला है, चरित्रहीन और धोखेबाज़ है । उल्टे, कृपाल धैर्य और साहस रखनेवाला है । अपना दायित्व उसने अच्छी तरह निभाया है । धान्यकूट में सुभाष की चोरी के बारे में किसीसे भी उसने बात नहीं की । यदि वह यह राज़ प्रकट करता, तो राजपरिवार का एक रिश्तेदार चोर सिद्ध होगा, परिवारकी ही बदनामी होगी । इसलिये यह राज़ उसने सिर्फ राजा से ही कहा । उसने यही सोचा कि सुभाष को दण्ड मिलना हो, तो वह राजा के हाथों मिलना ही उचित होगा । मामला राजपरिवार का है, इस से उसने सोचा कि कोई काम सिर्फ़ उतना ही करना चाहिये, जितना नितान्त आवश्यक हो । मतलब यह कि हर किसी को अपने नियमों, अधिकारों व सीमाओं से बाहर कदम नहीं डालना चाहिए । हद से बाहर जाने पर हर किसी को बुरे परिणामों का सामना करना पड़ता है । सुभाष से कृपाल ने जब थैली छीन ली तब वह छद्मवेष में था, उसे कोई पहचान नहीं सकता था । चाहता तो वह सारा धन खुद हड़प सकता था । मगर ऐसा न करके उसने राजा के प्रति अपनी वफ़ादारी जतायी । इन सभी वज़हों से ही राजा कृपाल से खुश हुए । इसमें राजा के चंचल होनेकी कोई बात ही नहीं उठती । उसे चंचल कहना बिलकुल ठीक नहीं होगा ।''

इतना कहकर जब विक्रम चुप हुए, तो राजा का मौन भंग होने के कारण शव के साथ बैताल गायब हो गया और जाकर फिर उसी पेड की डाल से लटकने लगा । (कल्पित)

(आधार: मनोज दास की रचना)

आत्मज्ञान

एक किसान अपने खेत की रखवाली कर रहा था । वहीं से एक संन्यासी कहीं जा रहा था । थोड़ी देर आराम करने की सोचकर दोनों एक पेड़ के नीचे जा बैठे ।

संन्यासी ने किसान से पूछा, "यह खेत तुम्हारा ही है न? फ़सल अच्छी है । इस बार भी सही वक़्त पर बारिश होगी?"

संन्यासी को नमस्कार करके किसान ने कहा, "स्वामीजी! फ़सल हाथ में आये, तब बता सकेंगे कि फ़सल अच्छी है या नहीं । बारिश भी कब कैसी होगी, यह हम पहले कैसे जान पायेंगे? अच्छा, अब आप अपनी बात कहिये, कहाँ जा रहे हैं आप?"

पास के पहाड़ की ओर इशारा करते हुए संन्यासी बोला, "वहाँ एक महान् ज्ञानसंपन्न सिद्ध पुरुष हैं । उपदेश के लिये मैं उनके पास जा रहा हूँ ।" फिर उदास होकर उसने कहा, "इसके पहले भी मैं ने तीन गुरुओं की सेवा की । लेकिन किसी ने भी मुझे आत्मज्ञान नहीं दिलाया । अब की बार क्या होगा, देख लूँ!"

उस पर किसान ने हँसकर कहा, "चालीस साल से फ़सल और पचास साल से बारिश मैं खुद देख रहा हूँ । फिर भी कल क्या होगा, यह जानने के लिये इतने सालों का अनुभव बेकार ही रहा । फिर आप तो दूसरों के अनुभव से आत्मज्ञान पाने की कोशिश में हैं—न जाने आप की इच्छा पूरी होगी भी, या नहीं!"

किसान की इन बातों से संन्यासी में ज्ञानोदय हुआ । आत्मज्ञान के लिये खुद प्रयत्न करना चाहिये, यह पहचान कर संन्यासी वापस चला गया ।

—शारदा अग्रवाल
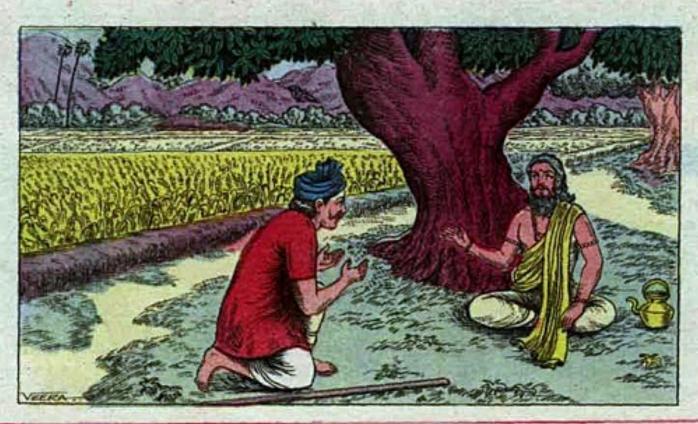
चन्दामामा परिशिष्ट-२०

ज्ञान का ख़ज़ाना

वह कौन था?

भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम! सैनिक-विद्रोह के दिन! एक छोटे से राज्य का राजा फिरंगियों से विद्रोह करनेवाले सिपाहियों का नेता बना। एक तरफ़ वह शत्रुओं से लड़ रहा था, तो दूसरी तरफ़ ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाएँ उसके राज्य को घेर चुकी थीं। ख़बर मिलते ही उसने अपने राज्य की ओर जाने की कोशिश की। लेकिन उसे रास्ता न देते हुए अंग्रेज़ सेना डट कर उससे लड़ने लगी। फिर भी साहस के साथ शत्रु-सेनाओं से लड़ते हुए वह आगे बढ़ा। अंग्रेजों की बंदूकों की गोलियाँ उसके दाहिने हाथ में घुस गयी थीं। इससे उसकी हालत यह हुई कि जान बचानी हो, तो दायाँ हाथ काट कर हटा दिया जाय।

शल्य-चिकित्सा के लिये वैद्यों को बुलवाने का वह वक़्त नहीं था। इसलिये गंगा नदी के तट पर खड़े होकर, अपने बायें हाथ में तलवार लेकर, उस से अपना दायाँ हाथ काट लेते हुए उसने कहा, "माँ, इस भेंट को स्वीकार करो।"

वह साहसी वीर अगर युवा होता, तो शायद ज़िंदा भी रह पाता! मगर उस वक़्त उस महाप्रतापी वीर की उम्र पचहत्तर साल की थी! इस घटना के दूसरे दिन ही उस योद्धा का देहावसान हुआ। कौन था यह वीर?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

क्या आप जानते हैं?

१. बहाई धर्म क्या होता है?
२. बहाई मन्दिर हमारे देश में कहाँ है?
३. 'उड़न-तश्तरियाँ' पहले पहल किसने देखीं?
४. उन्हें उसने कब देखा था?
५. उन्हें 'उड़न-तश्तरियाँ' क्यों कहा जाता है?

(पृष्ठ ३६ देखिये)

कामरूप राज्य

हमारे पुराणों में चर्चित सुप्रसिद्ध राज्यों में कामरूप राज्य बड़ा प्रसिद्ध है, जिसकी राजधानी है प्राग्ज्योतिषपुर । इस राज्य का नाम 'कामरूप' क्यों पड़ा? इस भूमि पर जो भी किसी चीज़ की कामना करे, पूरी हो जाती है । कुछ और विद्वान इस के नाम के साथ एक और पुराण कथा जोड़ते हैं, जो इस प्रकार है—शिवजी के क्रोध की आग में काम (मदन) जलकर राख हो गया । इस पर उसकी पत्नी रति को अत्यन्त दुख हुआ । उसने दीर्घ काल शिव की उपासना की । प्रसन्न होकर शिवजी ने मन्मथ को फिर जिंदा कर दिया । कामदेव ने यहीं फिर से अपना रूप पा लिया, इसलिये इस स्थान का नाम 'कामरूप' हो गया । कामरूप का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है । बारहों मास सर्वत्र हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है ।

प्राग्ज्योतिषपुर का मतलब है—पूरब की दिशा के लिये ज्योति जैसा नगर ।

आज का असम राज्य ही एक समय का पुराण-प्रसिद्ध कामरूप राज्य है । और गौहत्ती का पुराना नाम ही प्राग्ज्योतिषपुर है । इसके निकटवर्ती पहाड़ पर कामरूप राज्य के प्रसिद्ध देवता 'कामाक्ष' का मन्दिर
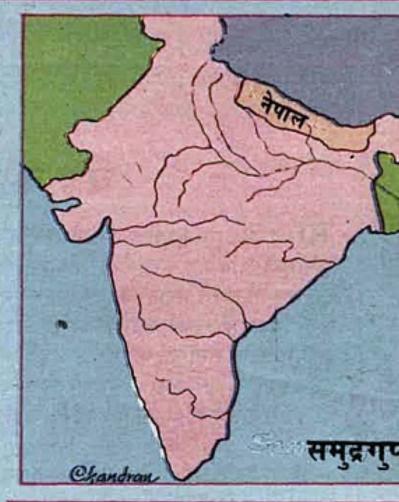
राक्षसी छिपकलियों के लिये खुदाई

एक वक्त इस धरती पर राक्षसी छिपकलियाँ (डायनोसोर) रहती थीं । इनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक पिछली एक सदी से डेनवर पर्वत के प्रान्त में खुदाई करवा रहे हैं । यह पर्वत यहाँ उत्पन्न होने से पहले ही-यानी १४ करोड़ वर्षों के पूर्व यहाँ उपस्थित राक्षसी छिपकलियों की पथराई गयीं हड्डियाँ यहाँ मिल रही हैं । इनकी मदद से इन राक्षसी छिपकलियों के बारे में कुछ और बातें प्रकाश में आने की आशा है ।

स्थित है । असम जानेवाले यात्री इस मंदिर का अवश्य ही दर्शन करते हैं ।

पुराणों के अनुसार नरकासुर मिथिला से कामरूप राज्य में चला आया । उसका पुत्र भगदत्त, महाभारत के युद्ध में कौरवों के पक्ष में रहकर मर चुका था । उसने युद्ध में अपने पराक्रम का खूब दर्शन कराया था ।

अब इतिहास को देखें, तो पता चलता है कि चौथी सदी ईसवी में समुद्रगुप्त के सामन्त राजा पुष्यवर्मा ने इस प्रान्त का शासन किया था ।

१३ वीं सदी में ऊपरी बर्मा से 'शान' कौम के अहोम राजाओं ने आकर यहाँ के अधिक भूभाग पर कब्ज़ा कर लिया था कहा जाता है कि तब से इस का नाम असम पड़ा है ।

सन १७२४ में यह प्रान्त अंग्रेज़ों के शासन में आया ।

अहोम राजाओं ने 'शान' कौम के नाम छोड़कर धीरे-धीरे हिन्दुओं के नाम स्वीकार करना शुरू किया ।साहसी राजाओं के रूप में वे प्रसिद्ध हुए । इन राजाओं ने अपने राज्यों को मुस्लिम और पठान राजाओं के दुराक्रमण से बचा लिया था।

आज का असम प्रान्त ७८,५२३ वर्ग किलो मीटरों में फैला हुआ है । गौहत्ती के निकट का दिसपुर शहर इसकी नयी राजधानी है ।

लत जो घटती जा रही है!

अमरीका में पिछले वर्ष धूम्रपान की लत पाँच प्रतिशत कम हुई है । एक जाँच कमेटी के प्रतिवेदन के अनुसार सन् १९८९ ई. में यहाँ कुल ५३, ३०० करोड़ सिगरेटों को जलाकर फूँक दिया गया था । एक नागरिक का औसतन वार्षिक सिगरेटों का उपयोग सात प्रतिशत घट चुका है ।

कुछ सवाल साहित्य के

१. 'उपन्यासकार' कहने योग्य अंग्रेज़ी का पहला उपन्यासकार कौन है?

२ उस का श्रेष्ठ उपन्यास कौनसा है?

३. क्या यह कल्पित है, या यथार्थ घटनाओं पर आधारित है?

४. इस उपन्यास का प्रधान पात्र कौन व्यक्ति पर आधारित है?

५. फ्रेंच और अंग्रेज़ी में अपना साहित्य लिख कर, केवल २९ साल की आयु में स्वर्ग सिधारा भारतीय उपन्यासकार कौन है?

उत्तर

वह कौन था?

बिहार के जगदलपुर का राजा कुंवरसिंह ।

क्या आप जानते हैं?

१. ईरान के बहाउल्ला (१८१७-९२) द्वारा स्थापित धर्म जो सर्वधर्म-समानता और शांतिप्रेम का प्रबोध करता है ।

२. नई दिल्ली में ।

३. केनेत अर्नाल्ड नामक अमरीकी वैज्ञानिक ।

४. जून १९४७ में ।

५. अर्नाल्ड ने कहा था कि पानी के ऊपरी तल पर फेंकी तश्तरियाँ जिस तरह उड़ती हैं, उसी तरह ये उड़ती हुई दिखाई दी थीं, इस लिए ।

साहित्य

१. डैनियल डीफो (१६६१-१७२१) ।

२. रॉबिनसन क्रूसो ।

३. यथार्थ घटनाओं पर आधारित ।

४. अलेक्जैंडर सेलकिर्क नामक नाविक ।

५. तोरू दत्त ।
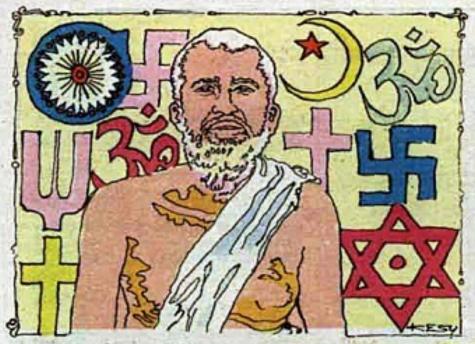
श्रीरामकृष्ण परमहंस

हमारे देश में जिन महापुरुषों ने जन्म लिया, उन में से श्रीरामकृष्ण परमहंस का नाम पहले लिया जाता है। इनके जीवन-काल में बहुतेरे लोग इन्हें कुछ भी नहीं जानते थे। लेकिन बाद में इनके प्रधान शिष्य स्वामी विवेकानन्द और दूसरे कुछ शिष्यों द्वारा श्रीरामकृष्ण का संदेश सब दूर फैल गया।

बंगाल में एक छोटा-सा गाँव था कमर्पुकूर। यहाँ क्षुदीराम नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक बार उसने तीर्थ-क्षेत्र गया के दर्शन किये। उस समय उसने एक अद्भुत स्वप्न देखा। उस स्वप्न में भगवान महाविष्णु ने दर्शन देकर कहा कि वे उस का पुत्र बन कर पैदा होना चाहते हैं।

उस की पत्नी चन्द्रादेवी ने १७ फरवरी १८३६ के दिन तीसरी सन्तान के रूप में एक पुत्र को जन्म दिया। पिता ने शिशु का नाम रखा गदाधर जो भगवान महाविष्णु के कई नामों में से एक था। शिशु की जन्मकुंडली देख कर ज्योतिषियों ने कहा कि एक महान् आत्मा धरती पर उतर आयी है।
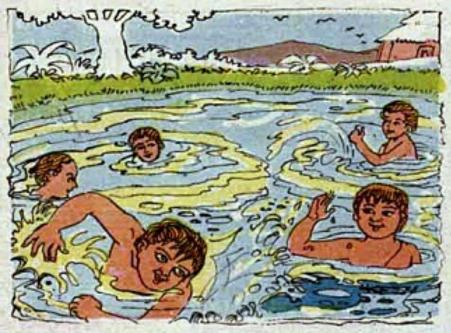
गदाधर ज्यों-ज्यों बड़ा होने लगा, वह लोगों का लाड़ला-प्यारा बनने लगा। गाँव की स्त्रियाँ उसे चूमते-पुचकारते हुए थकती न थीं। बचपन से ही वह बड़ा होशियार और तेज़-तर्रार था। खेलने-कूदने और तैरने में वह ज़्यादा दिलचस्पी रखता था।

उस समय गदाधर की उम्र सात साल की थी। वह हरे-भरे खेतों में विचरण कर रहा था। उसने आकाश में देखा। काले-नीले बादलों को छूते हुए सफ़ेद पंछियों का उड़ता झुण्ड उसने देखा। उसके मन को यह दृश्य बहुत लुभावना लगा। उसको परमानन्द हो गया। उसे पहले पहल जीवन में एक विचित्र अनुभूति हुई। यह उस की पहली समाधि-सी स्थिति थी।
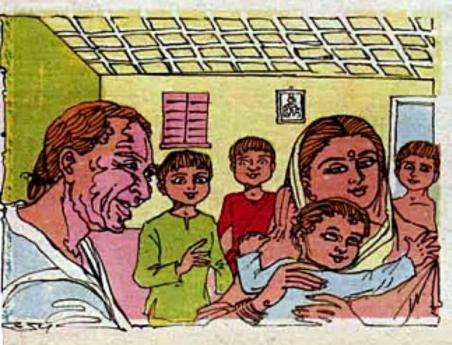
वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। उसके दोस्तों ने उसे घर पहुँचा दिया। जब वह होश में आया तो उसने मुस्कराते हुए चारों तरफ देखा। उस दिन से लेकर वह बार-बार समाधि अवस्था का अनुभव करने लगा।

कमर्पुकुर एक संपन्न गाँव था । गाँव से होकर जानेवाले यात्रियों के लिए उस गाँव के ज़मीनदार ने एक सराय बनवाई थी । उस सराय में अक्सर साधु-महात्मा ठहरा करते थे । गदाधर वहाँ जाता, और घंटों बैठ कर साधु-महात्माओं की बातें सुना करता था । वे जिन कहानियों को सुनाते, उन्हें वह चाव से सुना करता ।

एक दिन कुछ संन्यासियों ने गदाधर को बाल-संन्यासी का वेष धारण करवाया, उसके शरीर पर विभूति लगाई और उसी रूप में उसे घर भेज दिया । दण्ड-कमंडलु के साथ घर आये बच्चे को देख कर गदाधर की माँ चौंक पड़ी ।

आठ वर्ष की अल्पायु में गदाधर अपनी गज़ब की बुद्धि का प्रदर्शन करने लगा । एक दिन ज़मीनदार के घर में बैठे बड़े-बड़े पंडित एक समस्या को हल न कर सके और माथापच्ची करने लगे । तब वहीं रहे बालक गदाधर ने उस समस्या का हल बड़ी आसानी से कर दिया और सब को आश्चर्य-चकित कर दिया ।
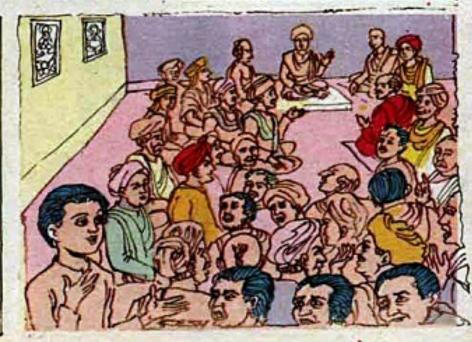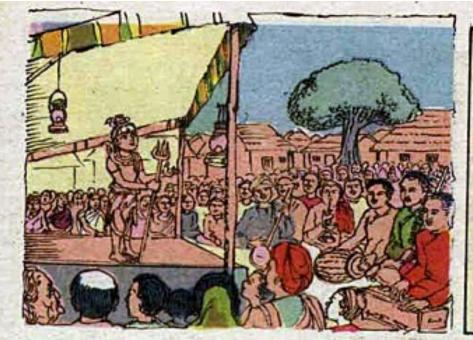
गाँव में एक बार कोई उत्सव मनाया जा रहा था । मित्रों की इच्छा पर गदाधर ने शिवजी का वेष धारण किया और मंच पर आ गया। लेकिन वहीं समाधि-स्थिति में चला गया । इस लिए कार्यक्रम को बीच ही में स्थगित करना पड़ा ।

गदाधर के पिता चल बसे । अपने बड़े भाई रामकुमार के साथ गदाधर कलकत्ता चला आया । शहर के बड़े बड़े भवनों को, आने-जानेवाले वाहनों को और चलते-फिरते व्यस्त जीवन को देख कर गदाधर अचंभे में पड़ गया ।
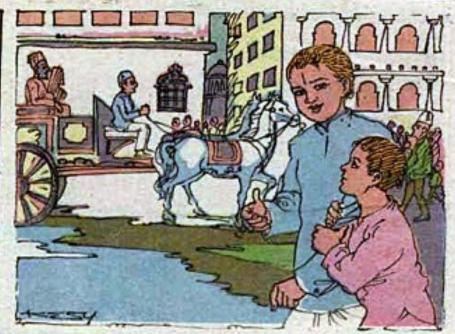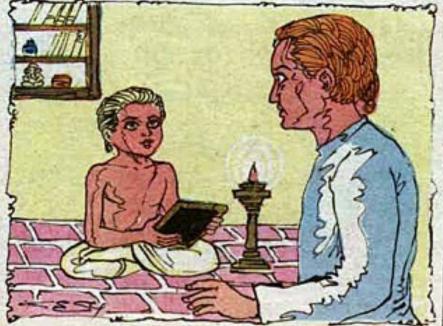
रामकुमार ने एक छोटी संस्कृत पाठशाला शुरू की । गदाधर भी उसी पाठशाला में पढ़ने लगा । परंतु कुछ समय के बाद उसने बड़े भाई से कहा—"मुझे ये पाठ अच्छे नहीं लगते । मैं चाहता हूँ, असली ज्ञान और सत्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर लूँ । मुझे वही उसूली ज्ञान चाहिए ।"

(क्रमशः)

इंसाफ़

गोवर्धनगिरि राज्य पर नरेन्द्र भूपाल शासन करता था। वह बड़ा बुद्धिमान और दयालु था। जनता के सुख-संतोष के लिए नित्य वह कुछ न कुछ करता रहता था। जनता की समस्याएँ खुद समझने की कोशिश करता था और भरसक उसकी मदद करता। इस से बढ़कर एक और विशेषता थी नरेन्द्र भूपाल की—इंसाफ़ का प्रेम! कोई जुर्म करे तो मुज़रिम को पकड़ने की अजब सूझ-बूझ राजा में थी। अपराधी को पकड़ कर वह उसे कड़ी से कड़ी सज़ा देता था, जिस से लोगों को इंसाफ़ मिल जाता था।

रोज़ सुबह निर्धारित समय पर, कोई भी आकर अपनी तकलीफ़ें और समस्याएँ राजा से कह सकता था। इस पर राजा उन समस्याओं का हल करने की कोशिश करता था। अपनी सूझ-बूझ व बुद्धि के आधार पर वह मिनटों में उनकी समस्याओं के हल बताता।

एक दिन सुबह रूपानी नाम की एक औरत राजा के पास अपनी फ़रियाद पेश करने आई। उस समय राजा मंत्री से कुछ विशेष बात कर रहा था। राजा ने पूछा-"क्या बात है, बहन?"

"प्रभु, मेरा नाम है रूपानी। मेरा पति रामदेव रोज़ नाव पर नदी पार करके शहर जाता है, वहाँ व्यापार करके रात को घर लौटता है। मैंने सुना कि कल सुबह नदी पार करते समय नाव से पानी में गिर पड़ा।" रूपानी ने अपनी बात कही।

राजा ने आश्चर्य ने पूछा—"सुना? इस का क्या मतलब?"

"हाँ महाराज, मैंने ऐसा ही सुना। पर बाद में किसी और बात का पता चला। हमारे पड़ोस में राधेश्याम नाम का एक सौदागर रहता है, वह भी मेरे पति के समान व्यापार के

राकेश श्रीवास्तव

लिए सुबह शहर जाता है । कभी कभी एक ही नाव पर दोनों नदी पार करते हैं और कभी-कभार अलग अलग नावों में भी जाते हैं । कल राधेश्याम एक और नाव में बैठा था, और दूर से उसने वह नाब देखी जिस में मेरा पति अकेला बैठा था । मल्लाह जागरी ने मेरे पति के हाथ से थैली खींच ली और उसे नाव से नदी में ढकेल दिया । यह सब दूर से राधेश्याम ने देख लिया । यह सुनते ही मैं इंसाफ के लिए आप के पास दौड़ी चली आई ।" आँखों में आँसू भर कर रूपानी ने कहा ।

राजा ने तुरन्त अपने सिपाहियों को बुलाया और रूपानी के पति की लाश को नदी में से ढूँढ़ निकालने का आदेश दिया । फिर राधेश्याम को बुलाने के लिए एक सिपाही को भिजवाया ।

राधेश्याम फ़ौरन चला आया । राजा को प्रणाम करके नम्रता के साथ निवेदन किया—"महाराज, मैं हूँ राधेश्याम । दूर से मैंने अपनी आँखों से देखा, जागरी ने रामदेव की थैली छीन ली और उसे नाव से नदी में ढकेल दिया । दूर से दोनों को पहचानने में मुझ से कोई भूल हुई ऐसा हो नहीं सकता ।"

अब राजा ने रूपानी से पूछा-"अच्छा, क्या तुम जानती हो कि अपने पति की थैली में कौन-कौन सी चीज़ें थीं?"

रूपानी ने जानकारी दी—"हाँ महाराज, चालीस सिक्के और मेरी दो चूड़ियाँ! मेरा पति इन पर कर्ज़ लेने शहर जा रहा था । उन्हीं को हड़पने के लिए जागरी ने मेरे पति को यों धोखा दिया होगा ।"
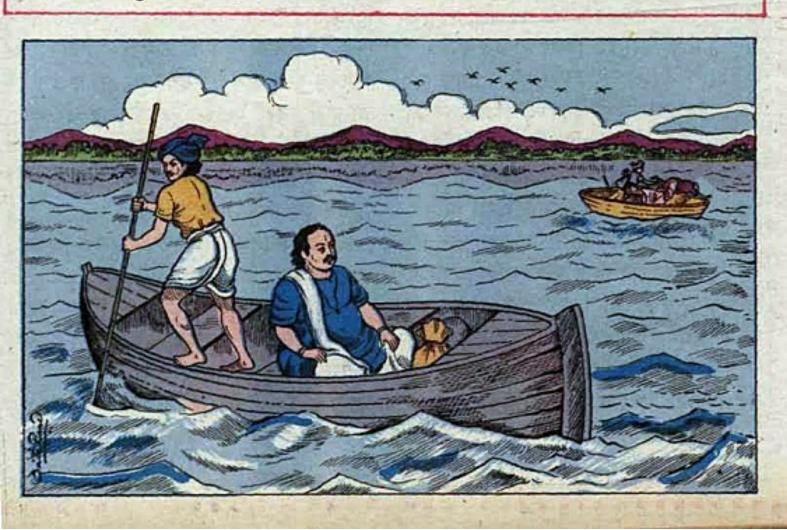
इतने में कुछ सिपाहियों ने आकर राजा को रामदेव की लाश मिलने का समाचार दिया। राजा और मंत्री रामदेव की लाश देखने के लिए चल दिए। जाते जाते राजा ने एक सिपाही से कहा—"तुम तुरंत जाकर जागरी को दरबार में ले आओ।" लाश को देख कर जब राजा वापस आया, तब तक जागरी वहाँ पहुँच गया था।

राजा ने जागरी से कहा—"तुम्हारे बारे में शिकायत है कि तुम ने रामदेव नाम के व्यापारी को कल सुबह अपनी नाव से नदी में ढकेल कर मार दिया!"

जागरी ने झट जवाब दिया—"महाराज, यह सब झूठ है। रामदेव नाव के किनारे पर बैठा झपकियाँ ले रहा था और खुद नदी में गिर पड़ा अपने हाथ की थैली के साथ और वह बहाव में बह गया!"

"तब उसे बचाने की कोशिश क्यों नहीं की तुम ने?" राजा ने पूछा।

"कोशिश? हाँ, ज़रूर की मैंने! जब वह डूबने लगा, तब मैं ने उसके भीगे सर के बाल पकड़ कर उसे ऊपर खींचने की खूब कोशिश की। मगर, मैं लाचार हूँ, उसे बचा न पाया। उसके भीगे बाल मेरे हाथ की पकड़ से फिसल गये।" जागरी ने कैफ़ियत दी।

इस पर राजा को बहुत गुस्सा आया। डाँटते हुए राजा ने कहा—"अरे, नालायक! धन के लालच में तुम ने ही रामदेव को नाव से ढकेल कर मार दिया था। मेरे पास इसके सबूत हैं। अभी अपना गुनाह कबूल कर लो, वरना कड़ी-से-कड़ी सज़ा मैं तुम्हें दूँगा।"

राजा के इस कथन पर जागरी मारे डर के
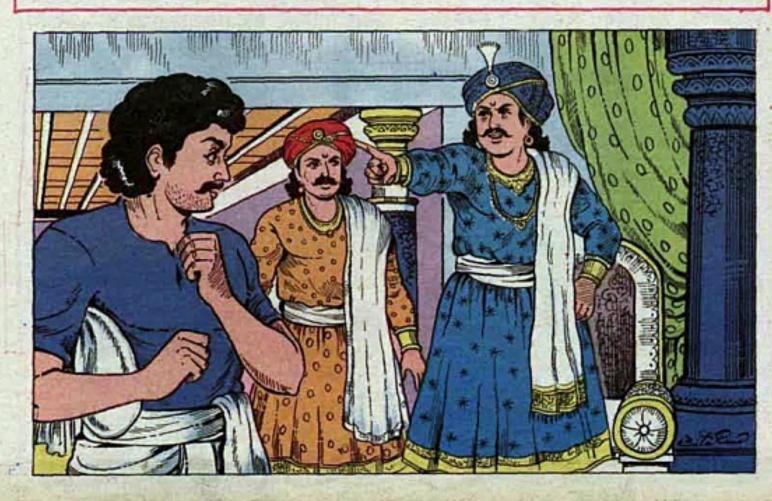
काँपने लगा। उसने स्वीकार किया—"हाँ महाराज, मेरी नीयत बिगड़ गई। पैसे के लालच में पड़ कर मैंने ही रामदेव को नदी में ढकेल कर मार दिया।"

राजा ने जागरी को आजीवन क़ैद की सज़ा दी और रूपानी को हर महीने राजकोष से नियमित रूप से कुछ धन मिलता रहे—इस का भी प्रबंध कर दिया।

मंत्री ने राजा से पूछा—"महाराज, आपने कैसे जान लिया कि मुज़रिम जागरी ही है?"

हँसते हुए राजा ने कहा—"जागरी ने कहा कि रामदेव नदी में गिर पड़ा 'थैली के साथ'! तभी मुझे उस पर संदेह हुआ। क्यों कि थैली की तो कोई बात ही नहीं थी, फिर भी जागरी ने थैली की बात कह कर ज़रूरत से ज़्यादा सावधानी बरती। रामदेव की लाश देखने पर जागरी को पकड़ने में और भी सहूलियत हुई।"

मंत्री ने आश्चर्य से पूछा—"सो कैसे महाराज?"

"लाश को आप ने भी देखा। मैंने जब लाश देखी, उसका रूप मेरे मन में अंकित हो गया। जागरी ने कहा कि नाव से नदी में गिरे रामदेव को बचाने के लिए उसके भीगे बाल पकड़ कर उसे ऊपर खींचने की उसने कोशिश की। इसी से मुझे पता चला कि मुज़रिम वही है।"

मंत्री ने फिर पूछा—"यह कैसे संभव हुआ महाराज?"

मुस्कराते हुए राजा ने कहा—"जागरी ने कहा था न कि नदी में डूबनेवाले रामदेव के बाल पकड़ कर उसे ऊपर खींचने की उसने कोशिश की थी?"

"हाँ, अवश्य कहा था महाराज!" मंत्री ने कहा।

"ऐसा कह कर ही जागरी ने अपना राज़ खोल दिया। असल में रामदेव के सिर पर बाल नहीं थे, वह एकदम गंजा था। तभी मुझे पता चल गया कि जागरी साफ़-साफ़ झूठ बोल रहा है।" राजा ने कहा।

राजा की सूझ-बूझ और बुद्धिमानी पर मंत्री चौंक उठा।

वीर हनुमान
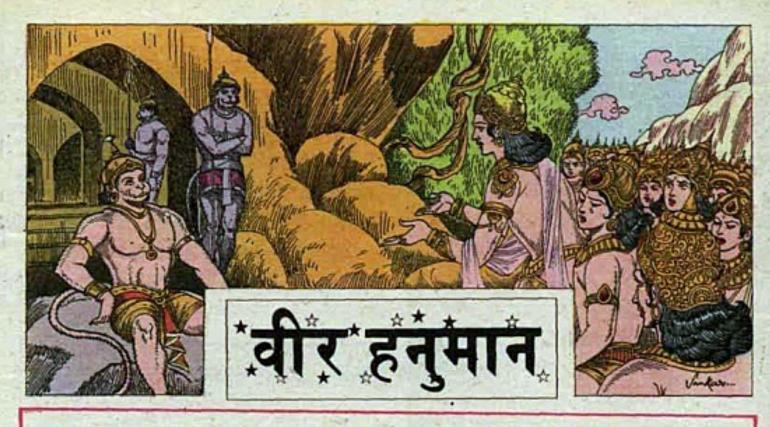
प्राचीन काल में सुपर्वगिरी पर केसरी नाम का एक वानर रहता था। उस पहाड़ पर साठ हज़ार वानर रहा करते थे। वे हँसी-खुशी अपना जीवन बिताते थे। पेड़ों पर लगे मीठे फल खाते, झरनों का ठंडा पानी पीते और मौज़-मज़े में इधर उधर घूमा-भटका करते थे। केसरी उनका नायक था। सब को केसरी से बहुत प्रेम था। सभी केसरी की आज्ञाओं का पालन करते। केसरी कभी किसी से अन्याय न करता था। सब की भरसक मदद करता था। केसरी को नायक के रूप में पाकर सभी खुश थे!

एक बार की बात है। प्रभासतीर्थ में रहनेवाले मुनियों को शंख और शबल नाम के दो हाथी बहुत परेशान करने लगे। मुनि जब ध्यान-धारणा करते तब ये हाथी ज़ोर-ज़ोर से चिंघाड़ते थे। मुनियों के निवास-स्थान के आसपास लगे पेड़ों को उखाड़ फेंकते और अंधाधुंध मनमानी करते। केसरी ने उन दोनों हाथियों को मार डाला और फिर बहुत समय तक कठोर तपस्या करके उसने अनेक अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त कीं।

उन्हीं दिनों शंबसाधन नाम का एक राक्षस उस इलाक़े में रहता था। उसने अपनी तपस्या से ब्रह्मदेव को प्रसन्न कर लिया और उससे एक वर प्राप्त कर लिया जिससे वह तीनों लोकों को जीत सके। यों वरदान मिलने पर वह राक्षस बहुत घमंडी बन गया। अब उसको किसी का डर नहीं रहा। उससे लड़ाई-झगड़ा कर उसे पराभूत करने की कोई कोशिश ही न करता। वह सब पर मनमाने अत्याचार करने लगा। इसी में उसे

१. हनुमान का जन्म
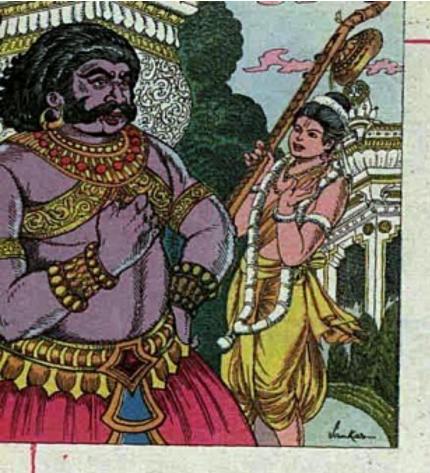
आसुरी आनंद प्राप्त होता। मुनियों, सिद्ध पुरुषों और देवताओं को सताने में उसे आनन्द आने लगा।

सभी देवता मिल कर ब्रह्मदेव के पास चले आए और उनसे कहा कि शंबसाधन की तकलीफ़ों को बर्दाश्त करने की ताक़त अब उनमें नहीं है, इन तकलीफ़ों से मुक्ति पाने का कोई मार्ग ब्रह्मदेव ही उन्हें बता दें। अब ब्रह्मदेव ने उन्हें केसरी के पास भेज दिया। सभी देवता केसरी के पास चले आए, प्रार्थना की–"केसरी, अब इस दुष्ट से हमारी रक्षा करना तुम्हारा काम है। हम ब्रह्मदेव के पास गये थे। उन्होंने हमें तुम्हारे पास भेजा है। तुम ताक़तवर हो और दुष्टों का निर्दालन करते हो। तुम्हें छोड़ कौन अब हमारी मदद करेगा?"

उसी समय नारद मुनि शंबसाधन के पास पहुँचे और उन्होंने कहा–"शुभमस्तु!"

शंबसाधन ने नारद मुनि को नम्रतापूर्वक प्रणाम किया और पूछा-"कहाँ से आ रहे हैं मुनिवर? कोई ख़ास समाचार है?"

नारद ने उत्तर दिया–"मैं अभी हेमकूट से आ रहा हूँ। वहाँ इन्द्र आदि देवता एक वानर से प्रार्थना कर रहे थे कि वह तुम्हें मार डाले। यही समाचार तुम्हें देने मैं यहाँ चला आया। अगर तुम्हें कुछ करना हो तो अभी से तैयार हो जाओ। वरना वानर-नायक तुम्हें परेशान कर डालेगा। वैसे तुम्हें कोई परास्त नहीं कर सकता यह मैं जानता हूँ।"

यह बात सुन कर शंबसाधन आग-बबूला हो गया। हुंकारते हुए उसने कहा–"मैंने दयालु बन इन देवताओं को जान से छोड़ दिया था। अब ये सब यों विचार करने लगे? मैं भी देखता हूँ कि एक बंदर मुझे कैसे मारता है! आज तक मरे हुए से ये देवता अब मुझे मारने की ताक में हैं! आजकल कोई मुझ से लड़ाई करने नहीं आता। सभी मुझ से डरते हैं। यह बंदर मेरी शक्ति को नहीं जानता। वरना मुझ से भिड़ने की हिम्मत न करता। आज मैं भी उसके छुक्के छुड़ाऊँगा। मुझे मारनेवाला अब तक पैदा नहीं हुआ है। अब सभी देवता आजमाएँगे मेरी ताक़त भी!"

प्रलयकाल के रुद्र की भाँति वह राक्षस हाथ में चमकती तलवार लिए बड़े वेग से केसरी के पास चला गया। शंबसाधन ने एक

बार हुंकार भरी । उस आवाज़ को सुनते ही केसरी के पासवाले देवताओं के दिल धड़कने लगे । सभी गुफाओं में और आसपास के पेड़ों के पीछे छिपने की कोशिश करने लगे ।

"अब कहाँ भाग जाओगे? मैं तुम सब को एक ही वार से मार गिराऊँगा ।" कहते हुए राक्षस देवताओं के पीछे भागने लगा, तो केसरी उस के आगे जा डट कर खड़ा हुआ और बोला-"अरे दुष्ट! मेरे हाथों मरने के लिए ही तुम आए हो । आजकल तुम बहुत घमंड़ी बन गये हो । पर मैं हूँ सेर को सवा सेर । आज मेरी भी ताकत तुम आजमा लो । सभी तुमसे डरते होंगे, मैं उनमें से एक नहीं हूँ । आओ, लड़ो मुझ से!"

"धत्, एक बंदर से क्या लड़ना? मुझ से लड़ते स्वयम् शिवजी भी डरते हैं । तुम क्या टिकोगे मेरे सामने? मैं अभी इसी क्षण तुम्हें मार गिरा दूँगा । तुम्हारे जैसे बहादुर कई देखे हैं मैंने आज तक । पर मुझ पर किसी ने विजय प्राप्त नहीं की । जीत हमेशा मेरी ही होती आई है । चलो, तुम भी आजमा लो अपनी ताक़त!" कहते हुए शंबसाधन ने तलवार उठाई ।

इतने में केसरी ने बड़ी चट्टान उठाई और राक्षस की छाती पर ज़ोर से मारा । वह चट्टान राक्षस की छाती से लग कर चूर-चूर हो गई । तब राक्षस ने केसर की छाती पर गदा फेंक दी । केसरी की छाती से लग कर गदा भी टूट कर चूर-चूर हो गई । पर केसरी ज़रा भी नहीं हिला । अब शंबसाधन ने केसरी पर एक शूल फेंका । केसरी ने उसे कुशलता से पकड़ लिया, और अपने घुटने पर उसे रख उसके दो टुकड़े कर दिए । तब केसरी को तलवार से मारने के लिए राक्षस आगे बढ़ आया । केसरी ने अपनी पूँछ से राक्षस के हाथ पर मारा तो दूसरे क्षण तलवार उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर पड़ी ।

नीचे गिरी तलवार उठाने के लिए शंबसाधन की अंतरात्मा ने स्वीकृति नहीं दी । इस लिए अब केसरी मुष्टि-युद्ध के लिए तैयार हुआ । केसरी ने अपनी मुष्टियों से राक्षस को ऐसा मारा कि शंबसाधन खून उगल कर मर गया । इस तरह देवताओं की आपत्ति मिट गई ।

देवताओं ने जाते हुए केसरी से कहा-"इस

तरह तुम कब तक ब्रह्मचारी बन कर रहोगे? अब शादी कर लो और गृहस्थ बन जाओ ।" देवताओं के जाने के बाद केसरी ने अपने लिए योग्य वधू की तलाश शुरू की ।

ब्रह्मदेव ने अहल्या नामक एक अत्यंत रूपवती का सृजन किया और उसका विवाह मुनि गौतम से करा दिया । इस दंपति के एक पुत्री हुई, जिसका नाम रखा गया अंजना ।

पूर्व जन्म में अंजना एक विद्याधर की पुत्री थी । वह अनुपम गायिका थी । इस लिए उसका नाम 'सुकंठी' पड़ा । एक बार सुकंठी अपनी सहेलियों के साथ हिमालय में विहार कर रही थी । बहुत देर तक घूमने-भटकने के बाद उसको नहाने की सूझी । वहाँ एक सरोवर में स्नान करके पासवाले पेड़ के नीचे चली आई । उसी समय अग्निदेव उसी रास्ते से जा रहे थे । उन्हें देख सुकंठी हँस पड़ी । वैसे अग्निदेव का अपमान करने का विचार उसके मन में बिलकुल न था । पर जो हो गया सो हो गया । इस पर अग्निदेव को क्रोध आया और उसने सुकंठी को शाप दिया कि अगले जन्म में वह वानर को जन्म देगी ।

इस के बाद कुंजर नामक वानर ने संतान के लिए भगवान शिवजी के प्रति तपस्या की । शिवजी ने प्रसन्न होकर कुंजर को दर्शन दिए और कहा-"पुत्र! तुम्हारे पुत्र पैदा होना असंभव है । मगर तुम्हें एक पुत्री प्राप्त होगी । उस सुयोग्य नारी को मेरे अंश से एक पुत्र होगा, जो बड़ा लोक-प्रसिद्ध होगा और तुम्हारे वंश का उद्धार करेगा!"
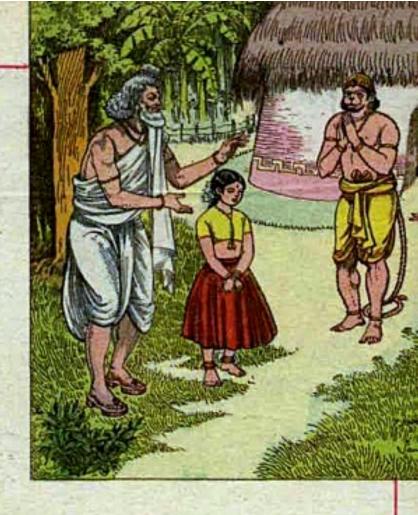
अब कुंजर इंतज़ार करने लगा कि कब उसको पुत्री मिलेगी । कुछ दिनों बाद गौतम अपने साथ अंजना को लेकर उसके पास आया और अंजना को कुंजर के हाथों सौंप कर कहा-"इसे तुम पाल लो ।" इस तरह शिवजी का वरदान सफल हुआ । कुंजर इस पर बहुत खुश हुआ । उसे लाड़-प्यार से पालना शुरू किया, अब अंजना अपने माँ-बाप को भूल गई । उसको सब तरह के सुख यहाँ प्राप्त हुए और उसका सौंदर्य दिन-ब-दिन निखरने लगा ।

अंजना कुंजर को ही पिता समझने लगी और कुंजर की पत्नी विंध्यावली को 'माँ' कह कर पुकारने लगी । धीरे धीरे अंजना बड़ी हुई और सयानी भी । कुंजर सोचने लगा कि

तुरन्त वन-विहार बन्द करके वह घर की ओर चल पड़ी ।

केसरी ने दूसरे दिन अपने प्रिय जनों से कहा कि अंजना उसे पसंद आई है । फिर उसने पूछा-"अंजना से मेरी शादी कैसे हो सकती है? मैंने अंजना को पसंद किया है ज़रूर, मगर क्या वह भी मुझे पसंद करेगी? अगर दुर्भाग्य से उसने पसंद नहीं किया तो?"

केसरी के बंधु-मित्रों ने कहा-"कुंजर हमारा रिश्तेदार बनने योग्य है । इस लिए हम पहले इज़्ज़त के साथ मंगनी के लिए उस के पास जाएँगे और हमारे केसरी को कन्यादान करने की प्रार्थना करेंगे । अगर वह नहीं मानेंगे तो बलप्रयोग का सहारा लेंगे ।"

फिर कुछ बुज़ुर्ग केसरी की तरफ से शादी की बात करने के लिए कुंजर के पास गये । उन्होंने कुंजर को केसरी की इच्छा बता दी । कुंजर को यह जान कर बहुत खुशी हुई कि केसरी जैसा सुयोग्य दामाद उसको मिल रहा है । उसने तुरन्त सहर्ष स्वीकृति दी । फिर अंजना और केसरी का विवाह विधिवत् संपन्न हुआ ।

अब अंजना की शादी कर देनी चाहिए ।

इस बीच केसरी ने अंजना की सुंदरता के बारे में बहुत कुछ सुना । अंजना की सुरीली आवाज़ के बारे में भी उसने सुना था । इस लिए उसे एक बार देखने के लिए निकला । उस समय अंजना वन-विहार कर रही थी । उस युवती के सुनहरे शरीर को देख कर वह चकित हुआ । उसका अद्‌भुत सौंदर्य देख केसरी बहुत मोहित हो गया । अगर अंजना अपनी पत्नी बन जाएगी, तो ज़िंदगी में दूसरी किसी चीज़ की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी-केसरी ने मन ही मन सोचा ।

अंजना ने भी केसरी को देखा और उसे बहुत पसंद किया । मगर उसने यह बात अपनी सहेलियों को नहीं मालूम होने दी ।

बहुत समय तक अंजना के भाग्य में कोई संतान न रही । अंजना और केसरी ने अनेक पूजाएँ कीं, कई तीर्थों में स्नान किया । परंतु किसी से कुछ लाभ न हुआ । आख़िर अंजना ने संतान के लिए वायु-भगवान की आराधना करने का निश्चय किया । केसरी ने उसके लिए अनुमति दी । उसने अंजना से कहा-"यह तपस्या तुम पुंजक-स्थल में

करो ।" अंजना ने उसी स्थान पर भगवान वायु के ध्यान में कठोर तपस्या शुरू की ।

अंत में वायु भगवान प्रसन्न हुए और अंजना को एक दिव्य फल देकर चले गये । वह फल खाकर अंजना गर्भवती हुई । अपने गर्भ-चिह्नों को देख पहले अंजना चकित हुई, फिर व्याकुल होने लगी ।

तब आकाश से एक अशरीर वाणी सुनाई दी–"पुत्री, डरने की कुछ भी बात नहीं है । एक बार भगवान शिव ने वायु देव को एक दिव्य फल दिया था । वही फल वायु भगवान ने तुम को दिया । तुमने उसे खा लिया, इस लिए तुम्हारे गर्भ में भगवान शिव ही बच्चा बन कर बढ़ रहे हैं । इस तरह तुम्हारे गर्भवती बनने में वायु भगवान ने सहायता दी, अतः तुम्हारा पुत्र 'वायु-पुत्र' कहलाएगा और तीनों लोकों में अपार कीर्ति प्राप्त करेगा ।"

इस प्रकार अशरीर वाणी होने के बाद स्वयं वायु भगवान अंजना के सामने प्रकट हुए और उन्होंने कहा-"पुत्री, अशरीर वाणी ने जो कुछ कहा वह सब सच है । तुम घर चली जाओ और पति को सब समाचार सुना दो ।" और फिर वायु-देव अदृश्य हो गये ।

अंजना वापस घर चली आई और केसरी को सब वार्ता सुना दी । इस पर केसरी की खुशी का ठिकाना न रहा ।

अंजना ने एक सुंदर और स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया । उस समय देवों ने दुंदुभियाँ बजाईं । आसमान से पुष्प-वृष्टि हुई ।
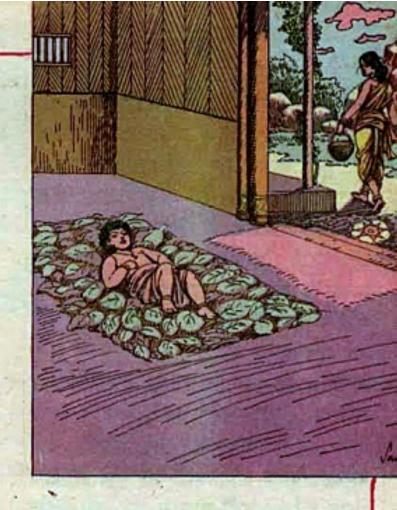
नवजात शिशु को देख कर केसरी को बड़ी प्रसन्नता हुई । उसने उत्सव मनाने की तैयारियाँ शुरू की ।

बच्चे की भूख मिटाने के लिए कुछ फल लाने का विचार अंजना के मन में आया । इस लिए कोंपलों की शय्या पर बच्चे को लिटा कर फल लाने के लिए वह बाहर चल दी । बच्चा भूखा था । माँ के पीछे वह भी पर्णशाला से बाहर आया । उसने पूरब की ओर देखा । उसने पहाड़ों के पीछे से निकलनेवाले लाल सूर्य को देखा ।

बच्चे ने सूर्य को कोई फल समझा । उसे पकड़ने के लिए वह आसमान में उड़ा । सूरज की तरफ इस तरह उड़ते हुए जानेवाले बच्चे को देख यक्ष, राक्षस, नाग सब चौंक उठे ।

उनको लगा कि कोई प्रलय आनेवाला है। उनको यह कोई नया अवतार-सा लगा।

उस बच्चे को देख कर उसके अनुयायी डरने लगे, तो सूरज ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा—"डरो मत। ईश्वर के तेज से लोकों का उद्धार करने के लिए पैदा हुआ यह आंजनेय है। बड़ा बल-पराक्रमवाला है यह! बच्चा है, इस लिए इसने मुझे कोई खाने का फल समझा, और मेरी ओर यह चला आ रहा है। तुम बेकार मत डरो।"

अपने को फल समझ कर चले आनेवाले आंजनेय को देख कर सूरज ने प्यार से अपनी गर्मी कम कर दी। इतने में आंजनेय वहाँ पहुँचा, सूरज को पकड़ कर मुँह में डाल लिया। फिर गर्मी महसूस कर उसे बाहर छोड़ दिया। सूरज को हाथों से मारते-पीटते हुए शोर मचाने लगा।

वह अमावस का दिन था। इस दिन राहु सूरज को पकड़ता है। सूरज को निगलने के लिए राहु आया। राहु को देख कर आंजनेय ज़ोर से चिल्ला उठा। उस चीख को सुन कर राहु डर गया और वहाँ से स्वर्ग की ओर चल पड़ा। सीधे इन्द्र की सभा में पहुँच गया।

उस समय विद्याधर इन्द्र का स्तुति-पाठ कर रहे थे। नारद मुनि वीणा का वादन कर रहे थे। अप्सराएँ नाच रही थीं। इंद्र चिंतामणि-पीठ पर बड़े वैभव के साथ बैठे थे। इंद्र के पास जा कर राहु ने कहा-"वाह, आप यहाँ नाच-गान का आनंद लेते हुए आराम से बैठे हैं?"

इन्द्र ने आश्चर्य से पूछा-"तो क्या हुआ? बात क्या है?"

"आज पर्व-दिन है। मैं सूर्य को पकड़ने गया था। पर एक और राहु मेरा शत्रु बन कर वहाँ आया और सूर्य को निगलने लगा। सूर्य और चन्द्र को खाने के लिए अगर एक और राहु है, तो फिर मैं किस काम का हूँ?" राहु ने इन्द्र से पूछा।

"एक और राहु? कहाँ है? चलो दिखा तो दो।" कहते हुए इन्द्र वज्रायुध धारण कर ऐरावत पर बैठा और तुरन्त चल पड़ा।

सेवा - धर्म
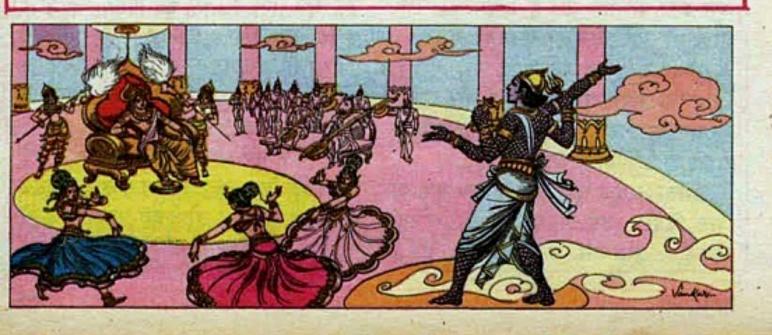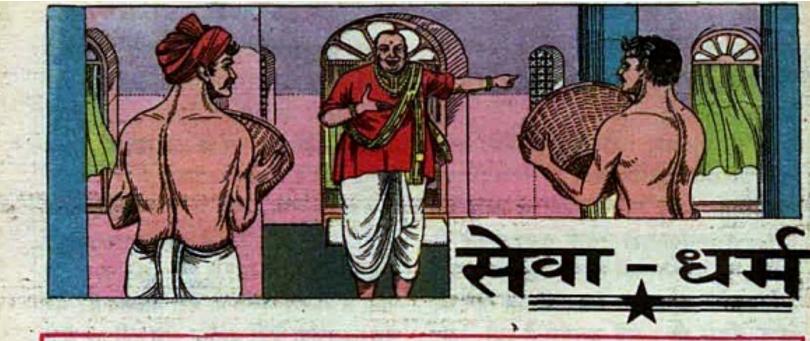
एक गाँव में एक रईस आदमी रहता था । उसके पास काम करने अक्सर नये नौकर आते रहते थे । मगर अपनी सेवा से मालिक को प्रसन्न करने में असफल रहते थे । रईस की धारणा थी कि अपने पास काम करने आनेवालों में सेवा-तत्परता नहीं है, काम के प्रति उनका लगाव नहीं है ।

एक बार उसके पास दो सेवक काम माँगने चले आये । रईस ने उन्हें एक परीक्षा रखकर परखना चाहा । उन दोनों को एक एक टोकरा देकर उसने कहा, "पिछवाड़े की फुलवाड़ी में एक कुआँ है; वहाँ जाओ और टोकरा भर पानी निकालकर ले आओ । शाम तक काम पूरा कर सको, तो हर एक को एक एक रुपया मज़दूरी दूँगा ।"

दोनों आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे ।

रास्ते में बड़े ने छोटे से कहा, "मालिक तो बावला है । टोकरे में पानी टिक सकेगा?"

"क्या तुम समझते हो कि मालिक यह बात समझता नहीं होगा?" छोटे ने पूछा ।

दोनों कुएँ के पास पहुँचे और उसमें से निकाल निकाल कर पानी टोकरे में डालने लगे । पानी डालते ही रिसता जाने लगा ।

छोटा फिर भी पानी निकाल निकाल कर टोकरे में डालता रहा । मगर बड़े को यह काम बेकार लगा । आख़िर ऐसे बेकार काम में समय क्यों बरबाद किया जाय, यही सोचा बड़े ने ।

"इस तरह कितनी देर टोकरा भरने की कोशिश करोगे? मालिक है पागल; अब मुझे लगता है कि तुम भी पागल बन रहे हो । शाम तक यूँ ही तुम बेकार काम करते रहो मैं रोकूँगा नहीं तुम्हें ।" कहकर बड़ा एक पेड़ की छाँव में जा बैठा ।

छोटा शाम तक कुएँ से पानी निकाल

२५ वर्ष पुरानी चन्दामामा की कहानी

निकाल कर टोकरे में डालता ही रहा । आख़िर कुएँ का पानी ख़तम होकर साथ साथ मिट्टी भी निकलने लगी ।

सूरज डूब गया । टोकरे में पानी की जगह कुएँ की मिट्टी जमने लगी थी । अब वक़्त ख़तम हो गया, इसलिये छोटे ने काम बंद किया । अनायास ही उसकी नज़र टोकरे की मिट्टी पर पड़ी । वहाँ कोई चीज़ चमक रही थी । छोटे ने उठाकर देखा, तो वह सोने की एक अँगूठी थी । बड़े उत्साह से उसे लेकर जब वह मालिक के पास जाने लगा, तो बड़ा भी उसके साथ हो लिया ।

मालिक ने छोटे के हाथ से अँगूठी ली और कहा, "इसी के लिये तो मैं ने तुम लोगों को पानी निकालने का काम सौंपा था । यह लो तुम्हारी मज़दूरी ।" कहते कहते उसने छोटे के हाथ पर एक रुपया रखा । फिर बड़े से उसने पूछा, "मैं ने सोचा था कि तुम भी काम करने आये हो । मगर तुम ने तो दो-एक बार टोकरे में पानी डालकर काम रोक दिया । तुम ने ऐसा क्यों किया? क्या तुम को वेतन की ज़रूरत नहीं है?"

इस पर शरमाते हुए बड़े ने कहा, "आप ने टोकरे में पानी भरने का काम दिया । घंटों पानी डालते रहो, तो भी टोकरा भरेगा नहीं । एक बूँद पानी भी उस में नहीं टिकेगा । यह सोचकर मैं ने काम छोड़ दिया ।"

बड़े के जवाब पर मालिक हँस पड़ा । "और तुमने सोचा कि मैं एक पागल आदमी हूँ । है न? मगर तुम ने ऐसा क्यों सोचा कि पानी से टोकरा भरना ही मेरा मक़सद है? मेरे मन का इरादा मैं ही जानूँगा, तुम नहीं न? मैं ने जो काम दिया, वही करते जाना तुम्हारा कर्तव्य था । काम ख़तम करके मज़दूरी ले जाना तुम्हारा धर्म है । काम के फल के बारे में सोचना मेरा काम है, तुम्हारा नहीं । देखो तुम में सेवा-धर्म नहीं है । काम करने में समर्पण-भाव नहीं है । इसलिये तुम नौकरी के लायक़ नहीं हो ।" इतना कहकर मालिक ने छोटे को नौकरी दे दी ।

छोटे ने अपनी सेवा-वृत्ति से मालिक को खुश कर के उसकी प्रशंसा पायी । उसने बहुत अरसे तक उस रईस के यहाँ काम किया ।

वल्लभ की बीमारी
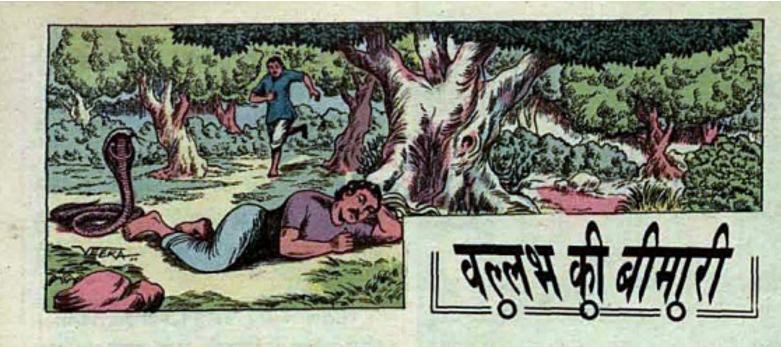
वल्लभ नाम का एक नौजवान पड़ोस के गाँव गया था, वहाँ से अपने गाँव लौट रहा था । जंगल का रास्ता था, भटक कर जंगल के भीतर चला गया । एक जगह पेड़ के नीचे अधेड़ उम्र का एक आदमी सो रहा था, उसका नाम था शीतल । एक ज़हरीला साँप शीतल को काटने जा रहा था । वल्लभ ने फुर्ती से साँप की पूँछ पकड़ कर उसे दूर झाड़ी में फेंक दिया ।

इस बीच शीतल जाग उठा और उसने जान लिया कि वल्लभ ने कैसे उसकी जान बचा ली । तब शीतल ने कहा—"बेटा, तुमने वक़्त पर आकर मेरी रक्षा की । तुम्हारे उपकार को मैं भूल नहीं सकता । अपने पासवाली यह जादू की थैली मैं तुमको दे देता हूँ । तुम जब भी उससे खाना माँगोगे, यह थैली तुम्हें खाना देगी । याद रखना, ज़रूरत के समय ही उसको काम में लाना है । कभी उसका दुरुपयोग मत करना । तो तुम्हारे दिन सुख-संतोष से गुज़रेंगे ।"

वल्लभ ने आश्चर्य के साथ शीतल से पूछा-"जादू की थैली? ऐसी जादू की थैली आपके पास कैसे आई?"

"बेटा, पहले मैं एक धनी आदमी था । मेरे चारों तरफ़ ऐसे लोग रहते थे जो मुझ से नहीं, मेरे धन से प्यार करते थे । अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से मेरी सारी संपत्ति हड़पने में वे कामयाब हुए । मैं कंगाल बन गया । मैंने न्यायाधिकारी के पास शिकायत की । पर उन दुष्टों ने रिश्वत देकर न्यायाधिकारी को अपने पक्ष में कर लिया । मुझे गाँव से निकाल दिया गया । लोगों की बेईमानी से तंग आकर, लाचार हो मैं इस जंगल में चला आया । यहीं कंद-फल खा कर जी रहा हूँ किसी तरह । इस बीच एक महात्मा से मेरी मुलाक़ात हुई । मुझ पर

सरिता त्रिवेदी

तरस खा कर, उसने यह जादू की थैली मुझे दे दी, ताकि मैं भूखा न मरूँ । उस साधु महात्मा ने मेरे पुण्य को ही यों जादू की थैली में बदल कर, उसे मेरे हाथ सौंप दिया था । ज़रूरत के वक़्त ही इस का उपयोग करके गाँव में गए बिना मैं यहाँ रह रहा हूँ । बहुत दिनों बाद एक अच्छे आदमी को देखने का सुअवसर मिला । मैं बहुत खुश हूँ आज!" शीतल ने कहा ।

वल्लभ ने हमदर्दी से पूछा—"यह जादू की थैली अगर आप मुझे देंगे, तो आप का गुज़ारा कैसे होगा?"

"अब तक जिन लोगों ने मेरा अपकार किया, उनकी भी मैं सहायता करता आया हूँ । मुद्दतों बाद मेरा उपकार करनेवाले तुम्हीं पहले आदमी हो । फिर बदले में तुम्हारी मदद करना मेरा कर्तव्य नहीं है? मुझे अपनी चिन्ता नहीं है, मेरे दिन किसी-न-किसी तरह कट ही जाएँगे!" शीतल ने कहा ।

वल्लभ ने कहा—"यह बात है, तो मेरी एक बात आप को माननी पड़ेगी । मैं भी अकेला ही हूँ । आप मेरे साथ चलिए, मेरे ही घर में रहिए ।"

शीतल ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया । दोनों जंगल से निकले, सही रास्ते का पता लगाते हुए वल्लभ के गाँव में पहुँच गये ।

कुछ दिन सुख-संतोष से गुज़रे । जादू की थैली के कारण वल्लभ के लिए भोजन की कोई समस्या नहीं आई । मगर वल्लभ को इतने से संतोष न था । वह चाहता था कि खूब धन कमा कर एक आलीशान कोठी बना ले और नौकर-चाकरों के साथ ऐश व आराम के साथ ज़िन्दगी बिता दे । उसने शीतल को अपने मन की बात बता दी ।

"इरादा अच्छा है । मेहनत की कमाई करो और बड़ा आदमी बनो, मुझे भी ख़ुशी होगी । हाँ, एक बात याद रखना । मेरी दी हुई जादू की थैली का कभी दुरुपयोग न करना ।" शीतल ने वल्लभ को सचेत किया ।

वल्लभ ने पूछा—"अगर दुरुपयोग करूँ तो क्या होगा भला?"

शीतल ने समझाया-"अगर तुम दुरुपयोग करोगे तो भी तुम को कोई कष्ट नहीं होगा, उसका फल मुझ को भोगना

पड़ेगा ।"

वल्लभ धनवान बनने की अपनी इच्छा को दबा न पाया । वह जादू की थैली से भोजन तैयार करके उसे बेचने लगा ।

अब शीतल गाँव में कई लोगों के घर चाकरी करने लगा । इतना ही नहीं, वह जहाँ भी काम करता, वहाँ काम के बदले में पैसा नहीं लेता था ।

अगर कोई आश्चर्य से उसे पूछता कि वह ऐसा क्यों करता है, तो वह कहता-"अपने पाप को धोने के लिए वह ऐसा कर रहा है । अगर सेवा के बदले में वह किसी से पैसा ले तो उसको नरक में जाना पड़ेगा ।"

गाँववाले वल्लभ से कहने लगे-"भाई, तुम तो खूब पैसे कमा रहे हो, फिर तुमसे बड़ी उम्रवाले शीतल को क्यों दर-दर चाकरी करने देते हो?"

इस लिए एक दिन वल्लभ ने शीतल से कहा-"देखो, तुम्हारी वजह से मैं बदनाम हो रहा हूँ । काम करना अब तुम छोड़ दो ।"

शीतल ने मुस्कराते हुए कहा-"वल्लभ, मैंने तुमको जो जादू की थैली दी है, वह मेरे पुण्य का प्रतीक है । जब तक मेरा पुण्य बचा रहेगा, तब तक ही यह जादू की थैली काम करेगी । मैं जानता हूँ कि इन दिनों तुम थैली का बहुत ज़्यादा उपयोग कर रहे हो ।"

जब वल्लभ को मालूम हुआ कि शीतल का पुण्य इस तरह उसके काम आ रहा है, तो वह चुप रह गया । एक साल भर में उसने एक कोठी बनवा ली । उसने एक धनी परिवार
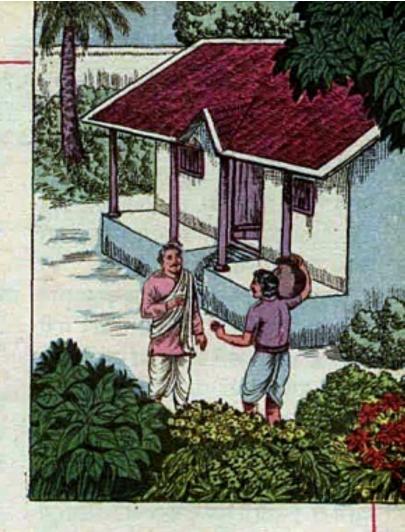
की लड़की से शादी भी कर ली ।

लेकिन एक दिन वल्लभ अचानक बीमार पड़ गया । अनेक वैद्यों ने आकर वल्लभ की परीक्षा की । लेकिन उनको बीमारी का पता न चला । तब वैद्यों ने वल्लभ से कहा-"अब हम कुछ नहीं कर सकते । तुम किसी योगी महाराज के दर्शन करो, शायद वे ही तुम्हारा इलाज कर सकेंगे ।"

वल्लभ की पत्नी एक प्रसिद्ध योगी के पास पहुँची । उसने अपने पति की समस्या महात्मा के सामने रख दी ।

वल्लभ को देख कर योगी ने कहा-"तुम ने बिना मेहनत किए सुख पाने का प्रयत्न किया । बिना श्रम के तुम अपनी संपत्ति बढ़ा रहे हो । अब तुम अस्वस्थ रहोगे तो भी क्या

होगा? तुम्हारी कमाई के लिए तुम्हारे स्वस्थ होने की क्या ज़रूरत है?"

वल्लभ ने दुख के साथ कहा—"महाराज, आप ऐसा मत कहिए । अगर मैं स्वस्थ नहीं रहता तो इस संपत्ति का क्या उपयोग है? इस धन-दौलत का सुख प्राप्त करने के लिए मुझे स्वस्थ रहना ज़रूरी नहीं है?"

"मेहनत करनेवालों को ही सुख का अनुभव करने का अधिकार है । तुम्हारी बात बड़ी विचित्र है । तुम दूसरों के श्रम का उपयोग कर रहे हो । इसी पाप का फल इस तरह बीमारी के रूप में तुम्हें सता रहा है ।" योगीराज ने कहा ।

वल्लभ ने कहा—"मेरे पास एक जादू की थैली है । एक महाशय ने बड़े दिल से यह थैली मुझे दे दी । उसी ने मुझ से कहा था कि अगर मैं थैली का ज़्यादा उपयोग करूँगा तो इसका पाप उस को लगेगा । वह मुझे नहीं छूएगा ।"

"अरे मूरख! तुम्हारे पाप को ख़ुशी-ख़ुशी लेनेवाला वह भलामानस होगा, मगर तुम्हारी वजह से उसे बहुत-सा श्रम करना पड़ता होगा । चाहे वह तुम से बहुत प्रेम करता हो, तुम पर ख़फ़ा न होता हो, फिर भी वह जो परिश्रम करता है, वह सब पाप में बदल कर तुम्हें निगलने जमा हो रहा है । अब भी तुम अपने को सुधार लो, उस भलेमानस की सेवा करो । धीरे धीरे तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर जाएगा ।" योगी ने वल्लभ को समझाया ।

अब वल्लभ को अपनी ग़लती महसूस हुई । उसने योगी को प्रणाम किया और उसके उपदेश का पालन करने का निश्चय करके घर वापस चला आया ।

धन कमाने के लिए जादू की थैली का उपयोग करना उसने बन्द कर दिया । उसने परिश्रम करना शुरू किया । वल्लभ ने शीतल को अपने घर बुला लिया, और उसे अपने पिता के समान मान कर उसकी सेवा करने लगा ।

धीरे-धीरे वल्लभ का स्वास्थ्य सुधरने लगा । उसके पास काफ़ी धन था, इस लिए आगे व्यापार करने में उसे कोई तकलीफ़ नहीं हुई । अब स्वास्थ्य के साथ उसकी संपत्ति भी धीरे-धीरे बढ़ने लगी । इस तरह वल्लभ सुख-संतोष के साथ जीने लगा ।
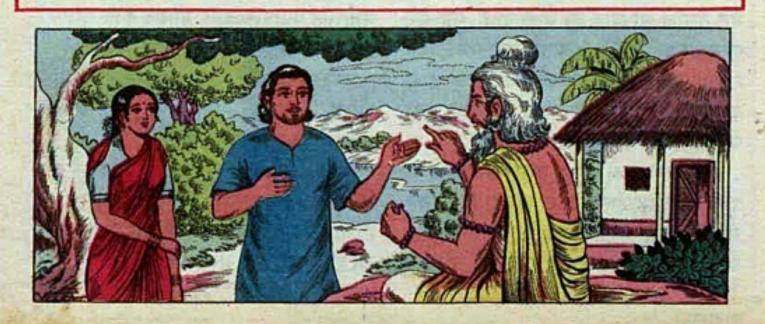
भाग्य-देवता

बात पुरानी है । चीन के एक गाँव में वांग नामक एक ग़रीब किसान रहता था । उसका अपना कोई नहीं था; न माँ-बाप, न भाई-बन्धु । बिलकुल अकेला था वह । उसके पास बस डेढ़ एकड़ की पुश्तैनी ज़मीन थी । इसी खेत में वह काम करता था और कुछ न कुछ उगा लेता था । उसने इस ज़मीन में कुछ फल के पेड़ लगा दिये थे । पपीता और अमरूद के पेड़ों में खूब फल लगते । खाने-पीने के बाद जो कुछ बचता, उसे बेचकर पैसा जमा कर रखता था ।

वांग के खेत से सट कर थोड़ी ज़मीन थी, जो बंजर पड़ी हुई थी । उसी ज़मीन को खरीद कर उस में भी खेती करने की इच्छा कई दिनों से उसके मन में थी। अब खेती-बाड़ी करने की कला में वह खूब माहिर बन गया था ।

ज़मीन उसी गाँव के किसी व्यापारी की थी । व्यापारी ख़ासा अमीर था; लोगों को उधार पैसा देकर साहूकारी करते करते वह बड़ा धनी बन गया था । किसी की गिरवी रखी हुई यह ज़मीन भी उसे ऐसे ही मिली थी ।

एक दिन वांग उस व्यापारी से मिलने गया और वह बंजर ज़मीन खरीदने की अपनी इच्छा उसने ज़ाहिर की । ज़मीन का मूल्य भी उसने पूछा । व्यापारी ताड़ गया कि वांग सचमुच ही ज़मीन खरीदना चाहता है; तब उसकी तीव्र इन्छा को मद्देनज़र रखते हुए व्यापारी ने उसका बहुत ज़्यादा दाम बोल दिया ।

वांग के पास तो इतनी रक़म थी नहीं । उस रक़म का कुछ आधा हिस्सा ही उसके पास था । व्यापारी ने ऋणपत्र लिखवा लिया । तब वांग ने व्यापारी से ज़मीन का बिक्रीपत्र अपने नाम लिख देने को माँगा । मगर व्यापारी ने ऐसा नहीं किया । वांग से उसने कहा कि वह जब

रेणुका देवी

पूरी रक़म चुकाएगा, तभी ज़मीन उसके नाम लिखी जाएगी ।

ज़मीन पाने के आनन्द में वांग सन्तोष से घर लौटा ।

थोड़ा वक़्त गुज़र गया । एक दिन व्यापारी के मन में आया कि वांग उस ज़मीन में किस प्रकार काम कर रहा है-ज़रा देख तो ले । उस समय वांग बंजर ज़मीन में हल चला रहा था । मेड़ पर बैठकर व्यापारी उसे देखता जा रहा था । अचानक हल का फल ज़मीन के भीतर की किसी चीज़ से टकरा गया ।

वांग ने हल रोक कर फावड़े से वहाँ की मिट्टी हटा दी । व्यापारी भी वहाँ पहुँचा और गड्ढे में देखने लगा । वांग ने गड्ढे में से दो कलश निकाले । दोनों कलश बहुत पुराने थे और सोने के थे । उन दिनों चीन में लोगों का विश्वास था कि भाग्यदेवता की जिस पर कृपा होती है, उसके पास वह सोने के कलशों के रूप में पहुँच जाता है । यह बात वांग जानता नहीं था, मगर व्यापारी भली भाँति जानता था । इसलिये व्यापारी ने कहा कि वे कलश उसके हैं । वांग ने वह बात नहीं मानी; और दोनों अदालत में गये ।

वांग ने न्यायाधीश से कहा कि उसने वह बंजर ज़मीन व्यापारी से ख़रीदी और जब हल चलाने लगा तो वे कलश निकल आये ।

मगर व्यापारी ने कहा, "न्यायाधीश महोदय, यह आदमी धोखेबाज़ है । वास्तव में यह बंजर भूमि मेरी है । उसको मैं ने किसी को भी बेची नहीं है । मैं खुद ही इस में खेती करना चाहता था, इसलिये जोतने का काम मैं ने इसे दे दिया । भाग्यदेवता कलशों के रूप में

मेरे घर आ रहा है; तो वांग अत्याशा और लालच से झूठ बोल रहा है । इस ज़मीन पर इसका कोई हक़ नहीं है ।"

"हुज़ूर, ज़मीन सचमुच ही मैं ने इस से ख़रीदी है, अपना सारा पैसा देकर!" वांग गिड़गिड़ाकर कहने लगा ।

"तो इसका सबूत क्या है?" न्यायाधीश ने पूछा ।

वांग का चेहरा फीका पड़ गया । व्यापारी के साथ हुई सारी बातें उसने न्यायाधीश को कह डाली ।

न्यायाधीश ताड़ गया कि कलश देखते ही इस व्यापारी की नीयत बदल गयी है । फिर भी कुछ सोचकर न्यायाधीश ने कहा, "भाग्यदेवता की कृपा व्यापारी पर रही । इसीलिये ये कलश उसीके हो गये ।" और उसने कलश व्यापारी को ही दिलवा दिये ।

बड़े संतोष से व्यापारी वहाँ से चला गया ।

वांग ने फिर न्यायाधीश से कहा, "मालिक, कलश न मिले तो न सही, कम से कम मेरी ज़मीन तो मुझे दिलवा दीजिए । पैसा पैसा कर के इकठ्ठा की हुई सारी रक़म देकर मैं ने इसे ख़रीदा है ।"

इस पर न्यायाधीश ने वांग से कहा, "चिन्ता मत करो । सब तुम्हारे अनुकूल होगा ।" और सांत्वना देकर उसे भेज दिया ।

दूसरे दिन बड़े सबेरे कुछ सिपाहियों को लेकर न्यायाधीश व्यापारी के घर गया और उसे गिरफ़्तार किया । ख़बर तुरन्त गाँव भर फैल गयी । कई लोग वहाँ जमा हुए ।

उन लोगों से न्यायाधीश ने कहा,
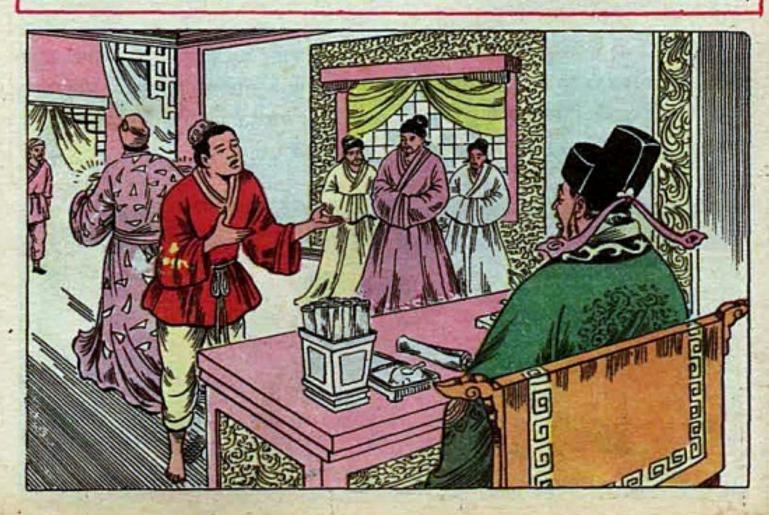
"भाइयो, कल इस व्यापारी ने झूठ कहा कि सोने के ये कलश उसे अपने खेत में मिले । ये कलश तो हमारे राजा के ख़ज़ाने से चुराये गये हैं । मेरे पास अभी-अभी इस बारे में ख़बर पहुँच गयी । इसलिये मैं ने व्यापारी को गिरफ़्तार किया । उसे अब कड़ी से कड़ी सज़ा मिलेगी ।" और उसने व्यापारी की ओर देखा ।

सुनकर व्यापारी को तो लगा, जैसे उसकी धड़कन ही बन्द होने जा रही है । डर से काँपते हुए उसने न्यायाधीश से कहा, "हुज़ूर, कल मैं ने झूठ कहा । मैं ने कोई अपराध नहीं किया है । सचमुच ही मैं कलशों के बारे में कुछ भी नहीं जानता । बंजर ज़मीन मैं ने कई दिन पहले वांग के हाथ बेच दी थी । शायद चोरी के पीछे उसी का हाथ होगा । कल ज़मीन में से कलश निकाल कर उसने अपराध मुझ पर ढकेल दिया है । सज़ा तो वांग को ही मिलनी चाहिए ।"

"इस का सूबत क्या है कि तुम ने ज़मीन वांग को बेच दी?" न्यायाधीश ने पूछा ।

तुरन्त व्यापारी ने वह ऋणपत्र लाकर दिखाया जो उसने वांग से लिखवाया था । इसी वक़्त का इन्तज़ार करनेवाले न्यायाधीश ने वह पत्र वांग को दे दिया और कलश भी मँगवाकर उसे देते हुए कहा, "भाइयो, व्यापारी धोख़ेबाज़ है । वांग के भोलेपन का लाभ उठाकर अपनी बेकार भूमि का दुगुना दाम उस से वसूलने की कोशिश इसने की । वांग की भूमि में सोने के कलश मिले, उन्हें भी हड़पने की कोशिश इसने की । मैं ने इसकी बातों का विश्वास करने का नाटक किया था कल । ये कलश राजा के नहीं, वांग की ज़मीन में मिलने से उसके अपने हो गये हैं । सचमुच ही भाग्यदेवता की कृपा है इस पर!"

असलियत जानकर वांग बहुत खुश हुआ । न्यायाधीश की होशियारी और न्याय करने की सतर्कता पर गाँव के लोगों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की ।
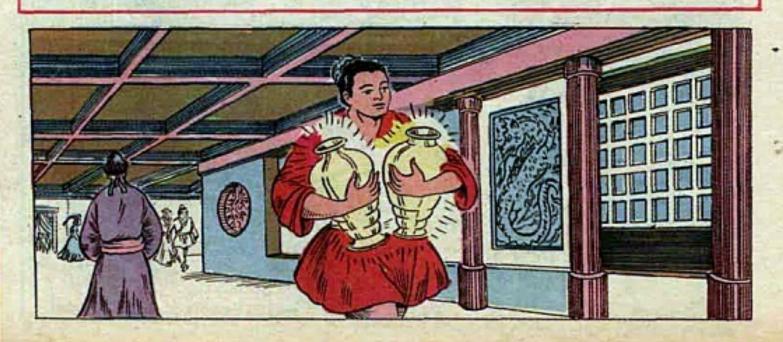
गहरी गुफा

सन १९५१ में फ्रान्स के पिरनीज़ में 'पियरी सेंट मार्टिन' गुफा की खोज हुई जो विश्वभर की सब से अधिक गहरी गुफा है। इसके प्रवेश-द्वार से लेकर भीतरी भाग तक की गहराई ४,३६४ फीट है।

साझेदार

अफ्रीका में गेंड़े की पीठ पर अक्सर 'आक्सपेकर' नाम की एक चिड़िया बैठी हुई दिखाई देती है। यह गेंड़े के शरीर पर रहने वाले छोटे छोटे कीड़े चुगकर खाती रहती है। इसके प्रत्युपकार में, अगर दूर से कोई संकट आये तो ज़ोर से चिल्लाकर गेंड़े को वह सचेत करती है।

बिजली

अनुमान लगाया गया है कि दुनिया में आम तौर पर, कहीं न कहीं, प्रति घंटे ३,६०,००० बार बिजली चमकती है।
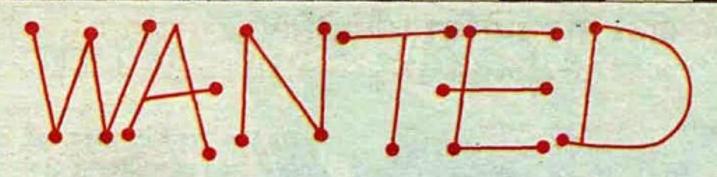
Teddy and his cronies Wobbit, Bow Wow, Papa Hare and Jumbo are on the loose in this city. They've already broken into several homes. Don't be misled by their soft and cuddly looks. They're trained to take on the toughest torture test ever — childhandling. It's also rumoured that they cast a magical spell over kids that can't be reversed. So... watch out. You may be the charmers' next target.

Stuffed toys

CHANDAMAMA TOYTRONIX

In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea

Because making toys is no child's play

Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras - 600 026.

Mudra:M:CTPL:4989

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर १९९० के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

M. R. Pimpalapure

A. V. Rangiah

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जुलाई १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मई १९९० की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : पेट भरा अब नीचे आओ!

द्वितीय फोटो : भूखे हैं कुछ हमें खिलाओ!!

प्रेषक : भरत प्रजापति, खांडोला (गणपती वाडे) मार्सेल, फोंडा गोवा।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिए :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting them in any manner will be dealt with according to law.

अपनी श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट पेंसिलें

हर एक के लिए, सबके लिए

ENTER THE

Where finding out is fun
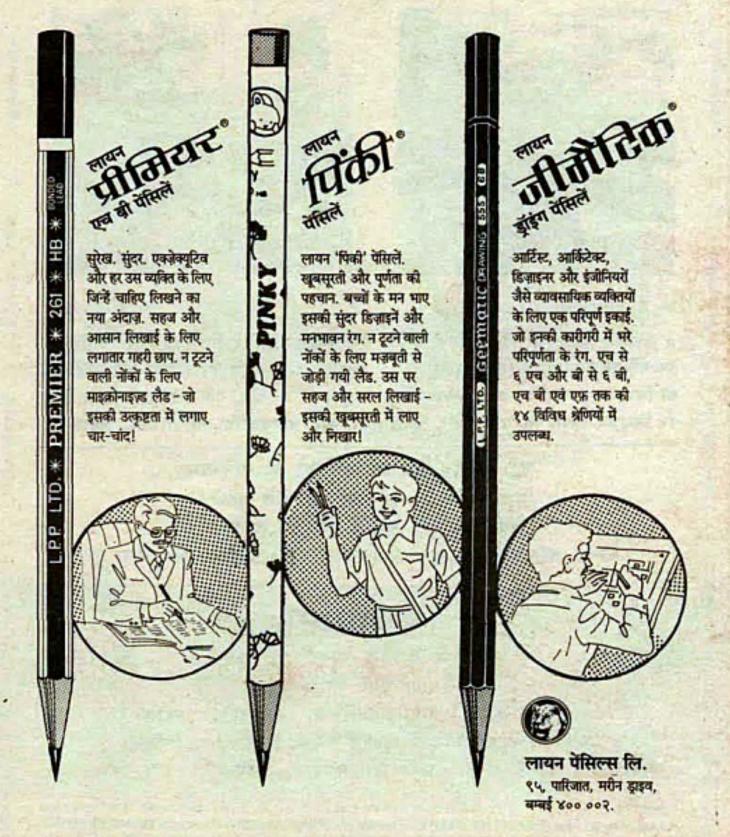
'YOUNG GENIUS' CONTEST!

Win a full year's scholarship!
And hundreds of other exciting prizes!

See the July issue of Junior Quest for details.

CHANDAMAMA (Hindi) July 1990 Regd. No. M. 5452